अखंड भारत की अखंड मुद्रा

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

बैनोप्रिन

वर्ष- 38, अंक- 1 जनवरी 2019

2018

2019 नववर्ष विशेषांक

बैंक नोट मुद्रणालय, देवास-455 001(म.प्र.)

(भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लि., नई दिल्ली की इकाई)

संदेश

आप सभी को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ,

मुद्रणालय की राजभाषा पत्रिका के इस नवीन अंक के माध्यम से आपसे चर्चा करते हुए मैं प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ।

मुझे आपको यह बताते हुए प्रसन्नता है कि विगत की दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं से उत्पन्न परिस्थितियों से हम आज पूरी तरह उबरकर एक नई सकारात्मक और चुनौतीपूर्ण दिशा की और सफलतापूर्वक जा रहे हैं। उन कठिन परिस्थितियों में आपने जो सकारात्मक ऊर्जा और जीवटता का परिचय दिया था उसी के बल पर आज हम 4300 मिलियन पीस नोट उत्पादन की चुनौती को भी सहर्ष पूरा करने की दिशा में अग्रसर हैं ।

यह एक अच्छा संकेत है कि बढ़ती प्रतिस्पर्धा के बीच हम अपनी कार्य कुशलता को निरंतर बढ़ाते जा रहे हैं साथ ही स्याही कारख़ाना द्वारा भी स्याही उत्पादन बढ़ती मांग के अनुरूप किया जा रहा है। स्याही कारखाने में वर्ष 2017-18 के दौरान 579.433 मीट्रिक टन विभिन्न प्रकार की स्याही का निर्माण हुआ और साथ ही स्याही कारखाने के नवीन भवन का निर्माण कार्य भी पूरा हो चुका है। जिसमें आधुनिक मशीनों की स्थापना का कार्य भी चल रहा है। स्याही की बढ़ती मांग को देखते हुए हमें उम्मीद है कि स्याही निर्माण के क्षेत्र में भी हम नई ऊंचाइयों को प्राप्त करेंगे। नोटों के उत्पादन में बढ़ोतरी के लिए एक नई लाइन की मशीन की खरीद का कार्य भी प्रगति पर है।

इसके अतिरिक्त हमारें द्वारा मेडिकल केशलेस सुविधा, स्पेशलिस्ट डॉक्टरों की नियुक्ति, बीएनपी कॉलोनी में गेल गैस की पाइप लाइन , पर्यावरण संरक्षण की दिशा में कार्य और सामाजिक कार्य (सी. एस. आर.) के अंतर्गत सरकारी चिकित्सालय को एंबुलेंस प्रदाय जैसे कार्य भी निरंतर किए जा रहे हैं।

आपको यह बताते हुए भी हर्ष है कि वित्तीय वर्ष 2017-18 में हमने रु 122 करोड़ का लाभ अर्जित किया है। उत्पादन बढ़ने के साथ ही और अधिक लाभ भी प्राप्त किया जा सकेगा। जिससे सभी कामगारों का भविष्य एक मजबूत नींव पर खड़ा होगा।

मैं आप सभी का आव्हान करता हूँ कि हम अपने इस राष्ट्रीय स्तर के संस्थान को एक अच्छी और मजबूत सोच के साथ विकास के पथ पर आगे ले जाएँ और इसे इतना समृद्ध और सुंदर बनाएँ कि बी. एन. पी. की भविष्य की पीढ़ी के लिए यह गर्व और गौरव का विषय हो।

यकीनन हमारी यह उपलब्धियाँ गर्व करने लायक है, परंतु आज हम जिस युग में रह रहे हैं वह प्रतिस्पर्धा का युग है और हमें उत्पादन और उससे जुड़े हर क्षेत्र में अपनी प्रतिबद्धताओं को बेहतर तरीके से पूर्ण करना होगा, जिससे कि लागत कम हो सके। तभी हम दीर्घकाल तक एक मजबूत इकाई के रूप में रह पायेंगे।

इसके अतिरिक्त हमारी एक और जिम्मेदारी है कि देश की राजभाषा हिंदी को भी मुद्रणालय में सम्पूर्णता के साथ प्रतिष्ठित करना है जिसकेलिए मुद्रणालय के राजभाषा अनुभाग द्वारा सराहनीय कार्य किए जा रहे हैं। यद्यपि मुद्रणालय में अधिकांश कार्य हिंदी में ही किये जा रहे है किंतु जहां जहां भी कमियां है उनको दूर करना भी हमारी जवाबदारी है। बैनोप्रिन जैसी राजभाषा पत्रिका के द्वारा भी कार्मिकों को राजभाषा में कार्य करने के प्रति निरंतर प्रेरणा- प्रोत्साहन प्राप्त होता है।

मुद्रणालय की राजभाषा पत्रिका इसी प्रकार भारत सरकार के राजभाषा लक्ष्यों को प्राप्त करनेमें दीपशिखा की भांति कार्य करती रहे। ऐसी शुभकामनाओं के साथ...

(राजेश बंसल)
महाप्रबंधक

स्वतंत्रता दिवस –2018 की झलकियाँ

मुख्य अतिथि – मा. श्री राजेश बंसल, महाप्रबंधक, बी.एन.पी.

सी.एस.आर गतिविधि के अंतर्गत एम्बुलेंस प्रदान।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयंती

प्रविष्टि आमंत्रण क्र. 06

हिन्दी में कहानी या कविता लिखें

उपर दी गई तस्वीरों को देखकर आपको हिन्दी में कोई प्रेरणास्पद कहानी या कविता बैनोप्रिन को लिखकर भेजना है। श्रेष्ठ कहानी/कविता को पुरस्कार के लिए अनुशंसित किया जाकर बैनोप्रिन में प्रकाशित भी किया जायेगा। प्रविष्टि भेजने की अंतिम तिथि 15 फरवरी 2019 रहेगी।

प्रविष्टि भेजने का पता है

संजय भावसार
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
बैंक नोट मुद्रणालय, देवास (म.प्र.)
सम्पर्क - 9713543275/ 07272-268 331
Email : sanjay.bhawsar@spmcil.com

युगांधर प्रिंटर्स, इंदौर- 9893699948

नोट– बीएनपी के कर्मचारी/अधिकारी, उनके परिजन और रक्त संबंधियों को प्रतियोगिता में प्राथमिकता दी जायेगी।

बैनोप्रिन

संयुक्त अंक 2019
वर्ष- 38, अंक -1

राजभाषा पत्रिका
बैंक नोट मुद्रणालय,
देवास (म.प्र.)

संरक्षक
श्री राजेश बंसल
महाप्रबंधक

सह संरक्षक
श्री एस. महापात्र
उप महाप्रबंधक

प्रकाशक
व्ही.जी. महरिया
प्रबंधक (मानव संसाधन)

संपादक
संजय भावसार
सहा प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल
हिमांशु शुक्ल
सहा. प्रबंधक (तकनीकी)

पी. के. मुदगल
सहा. प्रबंधक (तकनीकी)

मुख्य पृष्ठ परिकल्पना
संजय भावसार
सहा प्रबंधक (राजभाषा)
सुभाष कुमार
सहा प्रबंधक (मानव संसाधन)

अखंड भारत की अखंड मुद्रा

अनुक्रमणिका

संदेश		02-05
संपादकीय		06
चिंतन चौपाल		07
स्वामी विवेकानंद के अनमोल विचार	हिमांशु शुक्ल	07
सुशासन के एक उपकरण के	चंद्रशेखर दुबे	08
माँ	श्रीमती संगीता सूर्यवंशी	10
हमारे संस्थान की माँ वातानुकूलन संयंत्र	विनोदप्रकाश जोशी	11
उत्पादन लक्ष्य	विनायक राव जाधव	13
बधाई / शुभकामनाएं		13
खतरों से घिरता हमारा पर्यावरण	पी.के. मुदगल	14
2019 में कर रहे हैं टैक्स बचाने की प्लानिंग	विकास सिंह	15
सोच से तय होती है सफलता और विफलता	मो. नवाज मियां	16
विविध गतिविधियों की कहानी, चित्रों की जुबानी		18
भ्रूण हत्या-एक अभिशाप	श्रीमती स्नेहा आर्य पोद्दार	23
बहुत कुछ कहते हैं आपके फेसबुक स्टेटस	व्ही.जी. महरिया	24
फलसफा स्वस्थ जिंदगी का	सुभाष कुमार	25
उपभोक्ताओं के अधिकार	विक्रमसिंह चौधरी	26
प्रियजनों के लिये निकाले समय	श्रीमती नालंदा बागड़े	27
चीफ की दावत	भीष्म साहनी	28
डॉ. भीमराव अम्बेडकर महापरिनिर्वाण दिवस		32
बायोकैमिक चिकित्सा क्या है	डॉ. कैलाश सिंह नागर	33
काव्य-मोती	श्रीमती अंजू मोटवानी	34
भारतीय संविधान के रोचक तथ्य	अखिलेश गुप्ता	35
वार्षिक केलेण्डर 2019		36

प्रकाशित सामग्री से प्रबंध तंत्र, प्रकाशक तथा संपादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

संदेश

अति प्रसन्नता का विषय है कि बैंक नोट मुद्रणालय, देवास द्वारा विगत अनेक वर्षों से राजभाषा पत्रिका बैनोप्रिन का प्रकाशन किया जा रहा है।

यह सत्य है कि मानव की समस्त संवेदनाओं, भावनाओं, रचनात्मक तथा कार्य व्यवहार को भाषा के माध्यम से ही प्रकट किया जा है। साथ ही दूसरी मुख्य बात यह है कि मनुष्य की रचनात्मक गहराईयाँ स्वयं की भाषा के माध्यम से ही बेहतर ढंग से प्रकट होती है। संसार के महानतम साहित्यकारों की रचनाएँ इस बात का जीवंत प्रमाण हैं। साथ ही आम व्यक्ति के सुख-दुःख को प्रकट करने का माध्यम भी अपनी स्वयं की भाषा ही होती है।

बैंक नोट मुद्रणालय द्वारा राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य किया जा रहा है। मुद्रणालय को विगत में भी अनेक प्रशस्तियों और पुरस्कारों से सम्मनित किया गया है। इस प्रकार मुद्रणालय द्वारा राजभाषा के कार्य को बेहतर बनाने की दिशा में लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। बैनोप्रिन का प्रकाशन इस बेहतर कार्य को आगे बढ़ाने की दिशा में एक सराहनीय कदम हैं।

बैनोप्रिन के प्रकाशन में लगे संपादक, उनके सहयोगियों, समस्त रचनाकारों को मैं शुभकामनाएँ देती हूँ कि वे इसी प्रकार राजभाषा की अविरल ज्योति को बैनोप्रिन के माध्यम से प्रज्वलित रखें तथा भारत सरकार की राजभाषा नीति को सुदृढ़ बनाने में अपना योगदान देते रहें।

बैनोप्रिन के सफल प्रकाशन हेतु मेरी पुनः शुभकामनाएँ।

तृप्ति घोष

(तृप्ति पी. घोष)
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संदेश

बैंक नोट मुद्रणालय की राजभाषा पत्रिका बैनोप्रिन के शीघ्र प्रकाशित होने वाले नवीनतम अंक के साथ अपने विचार साझा करते हुए मैं प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ। विगत कई वर्षों से मुद्रणालय द्वारा इसका प्रकाशन किया जा रहा है जो कि राजभाषा की वृद्धि के लिए मुद्रणालय द्वारा किए जा रहे प्रयासों को दर्शाता है।

राजभाषा कार्यों की वृद्धि साथ ही मुद्रणालय के समस्त कार्मिको द्वारा मुद्रा उत्पादन जैसे चुनौतीपूर्ण कार्य को भी बहुत ही अच्छी तरह से किया जा रहा है जो आपकी कार्य निष्ठा को प्रतिबिम्बित करता है।

जहां तक रचनात्मक कार्यों की बात है तो उसमें भी यहाँ के कार्मिकों द्वारा अपनी बहुमुखी प्रतिभा का प्रदर्शन किया जा रहा है। यह बहुत ही सराहनीय प्रयास है कि इस बहुमुखी प्रतिभा को उभारने के लिए आपकी गृह पत्रिका द्वारा राजभाषा हिन्दी के माध्यम से एक उत्कृष्ट मंच प्रदान किया जा रहा है।

बैंक नोट मुद्रणालय में राजभाषा की उत्तरोत्तर वृद्धि के लिए और बैनोप्रिन पत्रिका की सफलता के लिए मेरी अग्रिम शुभकामनाएँ स्वीकार करें।

(अजय कुमार श्रीवास्तव)
निदेशक (तकनीकी)

संदेश

हम सभी के लिए यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि बैंक नोट मुद्रणालय, देवास द्वारा गृह पत्रिका बैनोप्रिन का प्रकाशन किया जा रहा है।

इस संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि किसी भी संस्थान की कार्मिक, गतिविधियाँ, रचनात्मक लेख, संस्मरण, कहानी, कविता के रूप में गृह पत्रिका में प्रकाशित होती है तब उनसे हम संस्थान के बौद्धिक परिदृश्य से परिचित होते हैं। जो हमारे मानवीय मूल्यों को विभिन्न रूपों में दर्शाती हैं। इस बौद्धिकता को प्रकट करने के लिए मातृभाषा या अपनी भाषा से बेहतर दूसरा कोई साधन नहीं हो सकता है। भारत देश में अपनी रचनात्मकता या बौद्धिकता को प्रकट करने के लिए राजभाषा हिन्दी एक सशक्त माध्यम है। बैंक नोट मुद्रणालय द्वारा राजभाषा हिन्दी की बेहतरी के लिए निरंतर सराहनीय प्रयास किए जा रहे हैं।

अतः हमें आशा है बैंक नोट मुद्रणालय, देवास के सभी कार्यपालक, कामगार एवं अन्य सुधी रचनाकार अपनी बौद्धिक गतिविधियों से हमें परिचित कराएंगे जिससे हम एक स्वस्थ एवं शिक्षाप्रद स्थिति का निर्माण करने में एक दूसरे को सहयोग प्रदान कर सकेंगे। इस महत कार्य के लिए मुद्रणालय के सभी कार्यपालकों /कामगारों को मैं धन्यवाद देता हूँ।

बैनोप्रिन के आगामी अंक की शुभकामना सहित...

(एस.के. सिन्हा)
निदेशक (मानव संसाधन)

संदेश

बैंक नोट मुद्रणालय की गृह पत्रिका बैनोप्रिन के माध्यम से अपनी भाषा में आपसे चर्चा करते हुए मैं प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ।

वस्तुतः गृह पत्रिका एक ऐसा मंच है जिसके माध्यम से छिपी हुई रचनात्मक प्रतिभाओं का रचना कौशल प्रकट होता है। मानव के भीतर अनगिनत भावनाएँ होती है जिनके लिए शब्द खोजना एक चुनौती भरा कार्य होता है और यह चुनौती तभी पूर्ण की जा सकती है जब अपनी भाषा में रचनात्मकता मुखरित हो रही हो।

बैंक नोट प्रेस में कार्यरत समस्त कार्मिक और उनके परिजन बधाई के पात्र है जिनके द्वारा मुद्रा उत्पादन के क्षेत्र में तो नए कीर्तिमान गढे ही जा रहे हैं और साथ ही राजभाषा को स्थापित और प्रतिष्ठित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया जा रहा है।

बैंक नोट प्रेस के राजभाषा अनुभाग द्वारा राजभाषा को प्रतिष्ठित करने और भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन के लिए जो भरसक प्रयास किए जा रहे हैं उसके लिए पूरी टीम प्रशंसा की पात्र है।

बैनोप्रिन गृह पत्रिका के प्रकाशन और इसकी सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

अजय अग्रवाल

(अजय अग्रवाल)
निदेशक (वित्त)

संपादकीय

आप सभी को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ ...

बैनोप्रिन के इस अंक कोआपके हाथों में सौंपते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता है। हमारे देश को स्वतंत्र हुए लगभग सत्तर वर्ष हो गये हैं। स्वतंत्रता दो प्रकार की होती है ; पहली भौतिक और दूसरी मानसिक। नि.संदेह हमने भौतिक स्वतंत्रता हासिल कर ली है पर इस प्रश्न का जवाब देना बहुत ही मुश्किल है कि क्या हमने मानसिक स्वतंत्रता भी हासिल कर ली है। यह भले ही बड़े शोध का विषय हो सकता है कि लंबे समय तक गुलाम रहे व्यक्ति को यदि आजाद कर दिया जाए तो भविष्य में वह किस प्रकार के पैटर्न पर चलेगा। ऊपरी तौर पर प्रत्यक्ष देखने पर भले ही भौतिक रुप से वह आजाद दिखेगा, आजादी के जब-तब गीत भी गुनगुनाएगा पर उसके जीवन जीने के पैटर्न पर ध्यान देने पर हम पाएंगे कि वह अपने जीवन के समस्त क्षेत्रों में अपने गुलाम दिनों के पैटर्न को सूक्ष्मरुपेण अप्रत्यक्ष रुप से दोहरा रहा होगा। वह गुलाम रहा व्यक्ति अपने बच्चों में भी अप्रत्यक्ष रुप से कहीं ना कहीं अपनी मानसिक गुलामी को हस्तांतरित कर रहा होगा। उदाहरण के लिए अपने देश के नागरिकों को ही देखें ; अधिकांश नागरिक अपने बच्चों को जन्म से ही अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में दाखिला दिलाना चाहते हैं। चाहे नेता हो या अभिनेता हो, चाहे गंगू तैली हो या राजा भोज, हर नागरिक यहीं चाहता है कि उसका बच्चा अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में ही पढ़ाई करे। बरसों तक ढोई गई गुलामी का यह हमारे बच्चों में प्रत्यक्ष हस्तांतरण नहीं है क्या?

मुझे भली-भांति याद है कि मेरा एक मित्र जब छठी कक्षा का विद्यार्थी था तो विज्ञान की अंग्रेजी माध्यम की पुस्तक मे उसे Photo Synthesis यानि प्रकाश संश्लेषण की रटाई करनी होती थी, जिसे अंग्रेजी में समझना एक बच्चेके लिये बहुत ही मुश्किल कार्य था। किन्तु ऐसी सैकड़ों चीजे मुझे या हमारे बच्चों को आज भी अंग्रेजी में पढ़नी होती है। नतीजा.. बेवजह का तनाव और भ्रामकता। पौधों की फोटों सिंथेसिस प्रसिजर यानि प्रकाश संश्लेषण प्रक्रिया को सूरज की रोशनी के साथ पौधों की क्रिया कहकर ही आरंभ से ही सरलता से बता दिया जाये तो परेशानी क्या है? गुलामी वाली भाषा को ही बच्चों में हस्तांतरित क्यों किया जा रहा है!

अंग्रेजी भाषा में दक्ष जरुर बनें पर बालमन को सहज भाषा में और अपनी भाषा में ही खिलने, खुलने और खेलने का अवसर प्रदान करें। सिस्टम को कोसने से क्या हासिल होना; हमें अपनी उन्नति का तीव्र मार्ग मानसिक गुलामी की बेड़ियां तोड़कर यदि मिल रहा है तो हानि क्या है। समय रहते हमें समझना होगा कि सिस्टम हम बनाते हैं, सिस्टम हमें नहीं बनाता।

बैनोप्रिन के रचनाकारों को पुन: बधाई की उनके प्रयासों से राजभाषा हिन्दी मुद्रणालय में निरंतर प्रतिष्ठामान है।

हमारी राजभाषा टीम नवागंतुक महाप्रबंधक महोदय और वरिष्ठ अधिकारियों के प्रति भी आभारी है, जो राजभाषा को प्रतिष्ठित करने के लिए हमें संबल प्रदान कर रहे हैं।

सुधी पाठकों का भी अपना स्नेह निरंतर बरसाने के लिये हम आभारी हैं।

(संजय भावसार)
संपादक

चिंतन चौपाल
धर्म-अध्यात्म-संसार
पर व्यावहारिक चर्चा का लोक मंच

असंतुष्टता को बनाये परिवर्तन का आधार

संजय भावसार
संपादक

वह 24 साल का नवयुवक था जब उसका कैम्पस सिलेक्शन हुआ था। घर की जिम्मेदारी भी उस पर कोई खास नहीं थी। एकमात्र उसकी माताजी ही उस पर आश्रित थी। विवाह भी उसका हो ही चुका था और पत्नी भी बैंक में अच्छे जॉब में थी। पर फिर भी उस युवक के मन के किसी कोने पर असंतुष्टता हिलोरें ले रही थी क्योंकि उसके जीवन में भव्यता, समग्रता, स्वतंत्रता और संतुलन स्थापित नहीं हो पा रहा था। इस असंतुष्टता का कारण भी स्पष्ट था कि सब होते हुए भी उसके पास परिवार के लिये समय और जॉब सिक्युरिटी नहीं थी और जॉब का तनाव था सो अलग। जीवन अन्य व्यक्तियों की भांति एक ढर्रे पर नीरस चल रहा था। सो उसकी इसी असंतुष्टता ने उसके भीतर पूर्व से ही संजोये एक स्वप्न को आकार देना शुरु किया। उसकी उद्यमशीलता ने इस स्वप्न में रंग भरना भी शुरु कर दिया। और आखिर उस नवयुवक ने एक रेस्टोरेंट खोल लिया और धीरे-धीरे कर के आगे बढ़ाया और नौ से ज्यादा बेरोज़गारों को रोज़गार भी दे दिया। भोपाल के पारस शर्मा की इसी असंतुष्टता और उद्यमशीलता ने उनके जीवन में भव्यता, समग्रता और संतुलन को स्थापित कर उनके जीवन को परिवर्तन से भर दिया।

महान दार्शनिक सुकरात का कथन था कि मैं एक संतुष्टमनुष्य की बजाय एक असंतुष्ट शूकर होना ज्यादा पसंद करुंगा।

आप अपने नीरस जीवन में यदि परिवर्तन लाना चाहते हो तो असंतुष्ट हो जाइए उसके विरुद्ध जो कि आपके जीवन को बेजान और नीरस बना रहा है। यदि हमारा जीवन परिवर्तनशील नहीं है तो वह नीरस और बेजान है और एक ही सुर में चल रहा है।

असंतुष्ट हो जाइये जीवन में सकारात्मक बदलाव के लिये, असंतुष्ट हो जाइये एक सुर में चल रहे बेसुरे जीवन के विरुद्ध। उद्यमशीलता के साथ रास्ता खोजते रहिये रोशनी की एक लौ के लिये। थोड़ी दूर चलने के बाद देखिये जीवन में कितना गुणात्मक परिवर्तन आता है। आश्चर्य से भर जायेगा हमारा संसार। हमारे आस-पास चीज़े वो ही थी और वो ही रहेगी पर फिर भी एक महान आश्चर्य यह हो जायेगा कि सब कुछ हमारा बदल गया है। दुनिया वही रहेगी पर असंतुष्टता और उद्यमशीलता हमें बदल कर रख देगी। हम वो नहीं रहेंगे जो हम बरसों से थे।

आइये हम एक कदम उठाये एक सुर में चल रहे बेसुरे जीवन को नया सुर देने के लिये ...

स्वामी विवेकानंद के अनमोल विचार

हिमांशु शुक्ल
सहायक प्रबंधक (तक. प्रचा.)
सदस्य - संपादक मंडल

- विवेकानंद कहते हैं कि ईसा मसीह की तरह सोचो और तुम ईसा बन जाओगे। बुद्ध की तरह सोचो और तुम बुद्ध बन जाओगे। जिंदगी बस महसूस होने का नाम है। अपनी ताकत, हमारी कला-कौशल का नाम है जिनके बिना ईश्वर तक पहुंचना नामुमकिन है।
- बाहर की दुनिया बिलकुल वैसी है, जैसा कि हम अंदर से सोचते हैं। हमारे विचार ही चीजों को सुंदर और बदसूरत बनाते हैं। पूरा संसार हमारे अंदर समाया हुआ है, बस जरूरत है चीजों को सही रोशनी में रखकर देखने की।
- अगर पैसा मनुष्यों की अच्छे काम करने में मदद करता है तो पैसा महत्वपूर्ण है, पर अगर वह दूसरों की मदद नहीं करता तो फिर यह पैसा किसी काम का नहीं सिवाय एक बुराई के इसीलिए इससे जितनी जल्दी पीछा छूटे, उतना ही अच्छा।
- सबसे पहले यह अच्छे से जान-समझ लो कि हर बात के पीछे एक मतलब होता है। इस दुनिया की हर चीज बहुत अच्छी है, पवित्र और सुंदर है। अगर आपको कुछ बुरा दिखाई देता है तो इसका मतलब यह नहीं कि वो बुरा है। इसका मतलब यह है कि आपने उसे सही रोशनी में नहीं देखा।

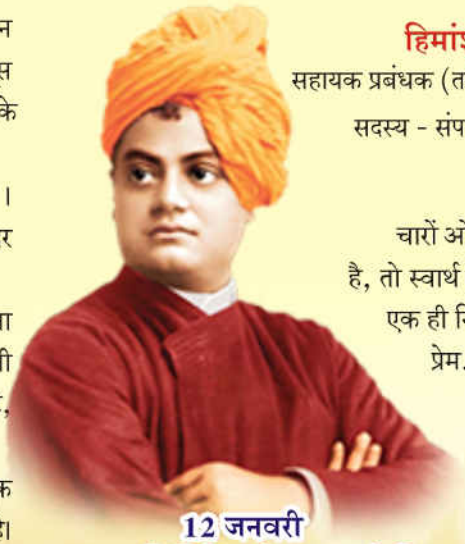

12 जनवरी
स्वामी विवेकानंद जयंती
के उपलक्ष्य में

चारों ओर बस प्रेम ही प्रेम है। प्यार फैलाव है, तो स्वार्थ सिकुड़न है। अत: दुनिया का बस एक ही नियम होना चाहिए, प्रेम... प्रेम... प्रेम...! जो प्रेम करता है, प्रेम से रहता है, वही सही मायने में जीता है। जो स्वार्थ में जीता है, वो मर रहा है इसलिए प्यार पाने के लिए प्यार करो, :योंकि यही जिंदगी का नियम है।

सुशासन के एक उपकरण के रूप में निवारक सतर्कता

चंद्रशेखर दुबे
तक. (कर्मशाला, सिविल)

हे नाथ ! निवेदन यही है मेरा,
कर्तव्य पर अविचल रहने की शक्ति दो
दो बल इतना कि सफल हो सेवा
मैं किसी अकिंचन को ना सताऊ
बलशाली के आगे डर ना जाऊ
संकीर्ण न मन हो, तेरे चरणों में बस शीश नवाऊ
माथा रहे यह सदा ऊँचा
बस रहे मुझे ध्यान सदा तेरा

गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगो र की उपरोक्त रचना हर उस कर्मचारी, उस अधिकारी की प्रार्थना है जो सतर्कता से जुड़ा है। हर अधिकारी हर कर्मचारी की दिल से यह प्रार्थना आती है कि मैं सतर्कता से जुड़ा होने पर अपने कर्तव्य पथ पर अविचल रहूँ, अपने कर्तव्यों का, नियमों का पालन कर सकूं, देश हित में अपना योगदान दे सकूं।

उपरोक्त प्रार्थना के लिये पुष्प के रुप में कुछ नीति वाक्य -

1.योग्यता व्यक्ति को ऊँ चाई पर पहुँचाती जरुर है लेकिन उसका चरित्र या समर्पण ही उसे वहाँ स्थिर रख सकता है।

2.There is no pillow so soft as clear conscience.

3. मनुष्य के जन्म के साथ ही उसे रिश्तेदार मिल जाते है किंतु धन्यवाद उस शक्ति का जो हमें अपने मित्र चुनने का मौका देती है।

4.इस पृथ्वी पर ईमानदार व्यक्ति का जन्म, ईश्वर का सबसे बड़ा कार्य है।

5.मेहनत करना किसी सफलता की ग्यारंटी नहीं है किंतु मेहनत नही करना असफलता की पूरी ग्यारंटी है।

उपरोक्त विचारों से मैं यह दर्शाना चाहता हूँ कि सुशासन के एक उपकरण के रुप में निवारक सतर्कता अपना काम तभी दिखा पाती है जब सतर्कता अपने पूर्ण विवेक एवं शुद्धमन से कार्य करती हो।

सुशासन क्या है .- सुशासन वस्तुत: एक ऐसी कार्य व्यवस्था है जिसमें सरकार का जनता के लिये, जनता का जनता के लिये, मालिक का कर्मचारी के लिये और परिवार के मुखिया का परिवारजनों के लिये अपनायी गई नीतियों का सही रुप से पालन होता हो। सभी नीतियाँ, नियम बनाएं ही भलाई के लिये जाते है किंतु उसका सही पालन होना ही सुशासन है। नियमों एवं नीतियों के पालन में पारदर्शिता हो, भ्रष्टाचार ना हो, सभी के लिये नियम एक से हो इन्ही को लेकर बनाई गयी प्रक्रियाँ ही सुशासन का हिस्सा बनती है। इन नीतियों, नियमों का सही पालन करना हम सभी का कर्त्तव्य है और इनके पालन से हम सुशासन की परिकल्पना को साकार कर सकते हैं। सुशासन की कल्पना राम राज्य से की जा सकती है। एक ऐसी व्यवस्था जो अपनी सभी प्रक्रियाओं में खरी उतरती हो, जो देशहित, समाज हित और अनाचार से दूर हो। इस सुशासन को साकार करने में बंधक तत्वों को दूर करना, उन पर नजर रखना भी एक ऐसा कार्य है जो काफी महत्वपूर्ण है। देखने में एक छोटा लगने वाला काम, अपने में विराट प्रक्रिया समेटे हैं। नीतियों, नियमों एवं प्रक्रिया के पालन के चलते सुशासन तो आ सकता है किंतु कतिपय शक्तियों का स्वार्थ सिद्ध नहीं हो सकता। ऐसी शक्तियाँ इस सुशासन को आने में बाधक होती है। इन्हें रोकने के लिए हमें तीसरी आँख की जरुरत है जो इन पर नजर रख सके, हमें आने वाले खतरों से बचा सकें। सुशासन के तत्वों को अमलीजामा पहनाने वाला तंत्र है सतर्कता।

सतर्कता .- कई बार सतर्कता को Investigation का एक भाग समझ लिया जाता है जबकि सही यह है कि Vigilence is not ainvestigation but it is prevention.

सतर्कता एक ऐसी प्रक्रिया का समूह है जो क्या हो रहा है, क्या होने वाला है इसके बारे में हमें सूचित करता है। किसी संस्था के सम्बंध में यह विचारणीय बिन्दू है कि उस संस्था को कमजोर करने वाले तत्व Anti Elements तो फिर भी अपनी हरकतो से पकड़ में आ जाते है किंतु आंतरिक Anti Elements की गतिविधियाँ कई

बार इतनी सूक्ष्म होती है कि संस्था के नुकसान होने के बाद वह दिखाई पड़ती है। सतर्कता हमें ऐसे ही परिणामों से सचेत करती है। सतर्कता का कार्य है - संस्थागत कार्यों की समीक्षा करना, उन पर नजर रखना।

सतर्कता तीन प्रकार की होती है -

1.दण्डात्मक सतर्कता।

2.निवारक सतर्कता (Preventive Vigilance)

3.निगरानी सतर्कता।

संस्थागत क्रिया कलापों में सतर्कता अपना अहम रोल निभाती है। Preventive Vigilence is a watchfulness what to happening & what to be happen prentice vigilance अर्थात निवारक सतर्कता हमें होने वाले खतरों या नुकसान से हमें बचाती है। निवारक सतर्कता अर्थात वो प्रकियाएँ जो हमारे अनुभव पर आधारित होती है। किसी परिणाम से सबक लेकर जो सतर्कता की जाती है वह है निवारक सतर्कता। दण्डात्मक सतर्कता और निगरानी सतर्कता का अपना एक कार्य क्षेत्र है किंतु निवारक सतर्कता का एक व्यापक क्षेत्र है व व्यापक असर होता है।

दण्डात्मक सतर्कता से कोई भी घटना पूरी तरह रोकी नहीं जा सकती। उसका प्रभाव लम्बे समय तक रहना मुश्किल होता है जबकि निवारक सतर्कता अपना प्रभाव लम्बे समय तक रखने में सफल होती है। निवारक सतर्कता को एक उदाहरण के रुप में हम ऐसे समझ सकते है।

यदि हम पम्प के द्वारा कहीं पर पानी पहुँचा रहे है और पाईप कई जगह से लीक कर रहा है तो इसमें पानी, समय और बिजली तीनों का नुकसान होगा। क्योंकि जिस कार्य के लिये बिजली और पानी का उपयोग किया जा रहा है वह सफल नहीं होगा। ड्शरज्ञरसश रोकना ही निवारक सतर्कता है।

निवारक सतर्कता का उद्देश्य निम्न है .-

1.कर्मचारियों /अधिकारियों में ईमानदारी को प्रोत्साहित करना।

2.ऐसी प्रक्रियाँ/कार्य प्रणाली की जटिलता दूर करना जिनमें कमियां होने की संभावना हो।

3.संस्था में अपनाई जा रही प्रक्रिया का समय-समय पर अध्ययन करना।

4.निवारक सतर्कता अपने कार्यों से भ्रष्टाचार को दूर करने का भरसक प्रयत्न करती है और ऐसे कार्यों से ही कहा जा सकता है कि निवारक सतर्कता सुशासन के एक उपकरण के रुप में बेहतर कार्य करती है।

निवारक सतर्कता के कार्य .-

1.संस्था में हो रही विभिन्न गतिविधियों पर नजर रखना।

2.टेण्डर, निविदा, क्रय विक्रय से सम्बंधित फाईलों का आकस्मिक निरीक्षण करना।

3.संस्था में लाभ के पदों पर बने अधिकारियों/कर्मचारियों की Rotation के आधार पर बदली करना।

4.ऐसे लोगों की सूची तैयार करना जिनके कार्यों में भ्रष्टाचार होने की संभावना हो।

इसके स्त्रोत .-

1.C & AG की Report

2.Technical Report

3.शिकायतें

सतर्कता का कार्य है किसी कार्य में हो रहे विलम्ब के संबंध में जानकारी प्राप्त करना। सतर्कता का कार्य है कार्य की गुणवत्ता के सम्बंध में सही जानकारी देना।

वर्ष 1964 में सतर्कता आयोग का गठन हुआ। 1988 में भ्रष्टाचार निरोधक कानून आया। 2003 में सतर्कता आयोग एक्ट लागू हुआ। 2005 में सूचना के अधिकार का नियम लागू हुआ। ये सब कार्य सतर्कता की पहल पर किये गये। कार्यालयों, संस्थाओं में हो रहे भ्रष्टाचार पर नकेल डालना सतर्कता आयोग का काम है। निवारक सतर्कता ऐसे मामलों को पहले ही उजागर करने का काम करती है।

पूज्य महात्मा गांधी ने बताया था कि देश को सात सामाजिक पाप नष्ट कर देंगे। जिनमे से एक था परिश्रम विहीन धन उपार्जन। परिश्रम विहीन धन उपार्जन ही भ्रष्टाचार है। गांधीजी ने यह भी कहा था कि सम्पूर्ण मानव जाति की आवश्यकताओं को पूरी करने का

सामर्थ्य प्रकृति में हैं किंतु किसी एक व्यक्ति की लालच को तृप्त करने की क्षमता उसमें नहीं। यह लालच ही भ्रष्टाचार की जड़ है। निवारक सतर्कता इस लालच को खत्म कर भ्रष्टाचार खत्म करती है।

अपने विचारों पर ध्यान दो, वे आपके शब्द बन जाते है, अपने शब्दों पर ध्यान दो, वो आपकी क्रिया बन जाती हैं, अपनी क्रिया पर ध्यान दो, वो आपकी आदत बन जाती है, अपनी आदत पर ध्यान दो वो आपका चरित्र बनाती है, अपने चरित्र पर ध्यान दो, वो आपकी नियति का निर्माण करती है।

हमारा चरित्र ठीक होगा तो निवारक सतर्कता अपने कार्य में सफल होगी।

कब तब छिप सकेगा
दाग लगा जो चादर में
बोया अफीम तो
कैसे महकेगी तुलसी घर आंगन में।

आज देश की आवश्यकता है निवारक सतर्कता के माध्यम से सुशासन स्थापित करने की। आप, हम सभी सतर्कता का काम कर सकते है। हमारी अपनी सतर्कता ही एक कठिन से लगने वाले कार्य की शुरुआत बनकर भ्रष्टाचार रुपी लंका को भस्म कर सकती है। भ्रष्टाचार वास्तव में किसी भी देश के उज्ज्वल मस्तिष्क पर लगा ऐसा कोढ़ का दाग है जो उज्ज्वल प्रकाश की किरणे वहा कभी आने नही देता। हमें अपने देश के लिये निवारक सतर्कता के प्रहरी के रुप में काम करना होगा। हम अपनी जिम्मेदारी दूसरों पर डालकर मुक्त नहीं हो सकते। दूध फटने पर वे ही लोग मायूस होते है जिन्हें रसगुल्ले बनाना नहीं आता। हमें यदि देश के लिये काम करना है, संस्था के लिये काम करना है तो निवारक सतर्कता को आगे लाना होगा। हमें अपना नजरिया बदलना होगा - बंद घड़ी भी दो बार तो सही समय बताती ही है। हम अपने आसपास की संदिग्ध गतिविधियों की जानकारी सतर्कता में देकर अपना कर्तव्य पूरा कर सकते है इसके लिये हो सकता है हमें भी अपना स्वार्थ, अपना लाभ खोना पड़े।

छोड़ दो ख्वाहिशों को कुछ बनने के लिये,
राम ने भी बहुत कुछ खोया था
श्रीराम बनने के लिये।

माँ

श्रीमती संगीता रविन्द्र सूर्यवंशी
अतिथि कविता

ईश प्रदत्त वरदान है माँ।
सब सुरों का आलाप है माँ।
तारों की मधुर झंकार है माँ।
अंबर की विशालता है माँ।
धरती की धीर गंभीरता है माँ।
आदित्य का प्रखर तेज है माँ।
शशि की शीतलता है माँ।
जल की निश्चलता है माँ।
सरिता की निर्मलता है माँ।
सागर की गहराई है माँ।
झरने की मधुर ध्वनि है माँ।
तरु की अचलता है माँ
गिरी की विशालता है माँ।
पाषाण की अडिगता है माँ।
वायु की चंचलता है माँ।
अग्नि की पवित्रता है माँ।
पुष्पों की कोमलता है माँ।
तितली की शीतल प्रलेप है माँ।
सृष्टिकी सृजनकर्ता है माँ।
ईश का दिया अनमोल उपहार है माँ
ईश प्रदत्त वरदान है माँ।

हमारे संस्थान की माँ वातानुकूलन संयंत्र

विनोदप्रकाश जोशी
(तकनीशियन वातानुकूलन)

जिस प्रकार एक माँ अपने सभी बच्चों से बिना किसी भेदभाव के उनके खाने पीने एवं परवरिश का पूरा ध्यान रखती है वैसे ही मैं (वातानुकूलन संयत्र) हमारे बैंक नोट मुद्रणालय संस्थान की एक माँ के समान संस्थान के विभिन्न अनुभागों जैसे प्री-कंडीशन पेपर स्टोर, मुद्रण के सभी अनुभागों, परिसज्जा के सभी अनुभागों, ब्लाक 4 के सभी अनुभागों, अप्रतिभूति मुद्रण, सी.सी.टी.व्ही रुम एवं उसका वर्कशाप, केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के कंट्रोल रुम तथा इंक फैक्ट्री आदि में वातानुकूलित हवा एवं आपेक्षित आर्द्रता (RH) प्रदाय करती हूँ।

आईये आप मेरे घर (वातानुकूलन संयंत्र) की ओर चलिये कर्मशाला रेल्वे प्लेटफार्म के बाद केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल की चौकी से मेरा घर (वातानुकूलन संयंत्र) शुरु होता है। इसकी स्थापना वर्ष 1973 में की गई थी। उस समय इसे पूरे एशिया महाद्वीप में सबसे बड़ा एवं आधुनिकतम वातानुकूलन संयंत्र माना जाता था।

वातानुकूलन संयंत्र की सीमा में प्रवेश करते ही हमारे दाहिनी तरफ पंप हाऊस आता है जहां पर अंडर ग्राउंड सम्प बना हुआ है। यहां से पूरे मुद्रण विभाग की मशीनों को सामान्य तापक्रम वाला पानी प्रदाय किया जाता है। इसके बाद सोलर प्लांट आता है जो वातानुकूलन संयंत्र को गर्म पानी देता है। सर्वप्रथम वर्ष 1986 में मध्यप्रदेश ऊर्जा विकास निगम द्वारा मुफ्त में यहाँ पर निःशुल्क 144 सोलर कलेक्टर्स वाला सोलर प्लांट स्थापित किया गया था। इसके पश्चात् इसका धीरे धीरे विस्तार होता गया तथा वर्ष 2003 में 600 सोलर कलेक्टर्स वाला एक और सोलर प्लांट स्थापित किया गया। इसकी क्षमता 60,000 लीटर है। यहाँ पर सूर्य की धूप से सोलर कलेक्टर्स के द्वारा 90,000 लीटर पानी गर्म किया जाता है। जिसका तापमान 50 डिग्री से लेकर 60 डिग्री सेल्सियस तक हो जाता है। तब इस गर्म पानी को डी-हयूमीडिफिकेशन हेतु पंप द्वारा काम में लाया जाता है। इस प्रकार से सोलर प्लांट के द्वारा हॉट वाटर जनरेटर पर हमारी निर्भरता कम होती है एवं इससे प्रतिवर्ष लगभग 2 लाख लीटर एल.डी.ओ. की बचत होती है, जिसकी अनुमानित लागत रुपये90 लाख से लेकर 1.0 करोड़ तक होती है।

आगे बढ़ने पर हॉट वाटर जनेरेटर रुप आता है जहाँ पर 2 हॉट वाटर जनेरेटर लगे हुये है जिनसे वातानुकूलन संयंत्र को गर्म पानी प्रदाय किया जाता है। अधिक ठंड और अधिक वर्षा के मौसम के समय जब वातावरण का तापमान बहुत कम होता है उस समय सोलर प्लांट हमारी मांग के अनुरुप तापक्रम नहीं दे पाता है तब ये हॉट वाटर जनेरेटर हमारी मांग के अनुसार तापक्रम को पूरा करते हैं।

इसके ठीक पीछे की तरफ अंडर ग्राउंड टैंक बने हुये हैं जहां पर हॉट वाटर जनरेटर में काम आने वाले एल.डी.ओ. को स्टोर करके रखा जाता है जिसकी क्षमता 84,000 लीटर की है। हॉट वाटर जनेरेटर रुम के पीछे एक वाटर सॉफ्टनर लगा हुआ है जिसकी क्षमता 90,000 लीटर/घंटा है। जो पानी की कठोरता को 5 PPM तक कम करता है।

हॉट वाटर जनेरेटर रुम के बाद मुख्य वातानुकूलन संयंत्र आता है । यहां पर पांच चीलर मशीनें लगी है जिनकी कुल केपेसिटी 2450 TR है। मुख्य संयंत्र के पीछे की तरफ 8 कूलिंग टॉवर लगे हुए हैं। यहाँ पर कंडेंसर वाटर के तापक्रम को कम किया जाता है। यहाँ से प्राप्त पानी (कंडेंसर वाटर) चीलर के कंडेंसर और मुद्रण की थरमॉरेग्युलेशन यूनिट के कंडेंसर को दिया जाता है। चीलर मशीनें पानी को लगभग 5.5 डिग्री सेल्सियस तापक्रम तक ठंडा (चिल्ड) करती है। एक कोल्ड वेल में डाला जाता है जहां से पानी निम्न चार स्थानों (लाईनों) के लिए पंप द्वारा भेजा जाता है।

✻एक लाईन मुद्रण अनुभाग की मशीनों के लिए,
✻दूसरी लाईन एयर वॉशर के लिए,
✻तीसरी लाईन एयर हेंडलिंग यूनिट के लिए, तथा
✻चौथी लाईन वाल्टों के ऐयर वॉशर के लिए जाती है।

उपरोक्त एयर वॉशर और एयर हेंडलिंग यूनिट विभिन्न अनुभागों को वातानुकूलित हवा एवं सापेक्षित आर्द्रता (RH) प्रदान करती है। इन सभी 10 एयर वॉशर (जिसमें से छह मुद्रण के अनुभागों के लिए, एक प्री-कंडीशन पेपर स्टोर के लिए, दो मुद्रण के वाल्टों के लिए ब्लॉक तीन के ऊपर, एक इलेक्ट्रोफोमिंग के लिए लगे हुए हैं) और 24 एयर हेंडलिंग यूनिट विभिन्न अनुभागों में लगे हुए हैं। अनुभागों से विभिन्न सेंसर्स के द्वारा इन्हें सिग्नल प्राप्त होते हैं। ये सिग्नल अनुभागों के तापक्रम और आर्द्रता के अनुसार कम ज्यादा होते रहते हैं। इनके सिग्नल के अनुसार एयर वॉशर और एयर हेंडलिंग यूनिट कार्य करते हैं और हमें वांछित वातानुकूलित स्थिति (कंडीशन) देते हैं।

इन एयर वॉशर और एयर हेंडलिंग यूनिटों से विभिन्न अनुभागों में शुद्ध (फ्रेश) वायु प्रदाय करने की स्वचालित (ऑटोमेटिक) व्यवस्था रहती है। यहाँ पर स्वचालित (ऑटोमेटिक) व्यवस्था यह रहती है कि विभिन्न अनुभागों से अशुद्ध हवा को रिटर्न एयर ब्लोअर के माध्यम से वापस एयर वॉशर में खींचा जाता है और इसमें से कुछ हवा को बाहर खुले वातावरण में भेज दिया जाता है और शेष हवा का उपयोग खुले वातावरण से फ्रेश हवा मिलाकर किया जाता है। इस हवा में से धूल आदि अशुद्धियों को एक 'कोर्स फिल्टर' द्वारा साफ किया जाता है। उसके बाद इसे फिर से पानी के एक स्प्रे चेम्बर से गुजारा जाता है। जहां हवा को वॉश किया जाता है। फिर माइक्रोएयर फिल्टर हो जाती है और यहाँ हमें अशुद्धि रहित हवा प्राप्त होती है। इस प्रकार की व्यवस्था से सभी अनुभागों में शुद्ध (फ्रेश) वायु प्राप्त होती रहती है। फिर इस हवा को जिसका कि तापमान 18.19 डिग्री सेल्सियस तथा ठंडक 90 से 95 % होती है, को एक हॉट वाटर क्वाइल रुम से निकाला जाता है यहाँ पर सापेक्षित (RH) तथा तापमान अनुभागों की मांग के अनुसार तापक्रम 21.24 डिग्री सेल्सियस एवं सापेक्षित आर्द्रता (RH) 65-+5% नियंत्रित कर उसे मुद्रण एवं अन्य अनुभागों में भेजा जाता है।

एक एयर वॉशर (जिसे कारगिल के नाम से पुकारते हैं) नई मुद्रण वाल्ट एक्सटेंशन बिल्डिंग अनुभाग में लगाया गया है जो मुद्रण अनुभाग के वाल्ट नंबर 31 से लेकर 36 तक की वांछित वातानुकूलित स्थिति (कंडीशन) को पूरा करता है। मुख्य वातानुकूलित संयंत्र में विभिन्न क्षमता के 56 पंप लगे हुये हैं, जिनके द्वारा ठंडे और गर्म पानी के अनुभागों और मशीनों को प्रदाय करने और अनुभागों तथा मशीनों से प्राप्त पानी को पुन-चक्रीकरण प्रक्रिया में लाने के लिए उपयोग में लाये जाते हैं। ठंडा (चिल्ड) पानी सभी एयर वॉशर और एयर हेंडलिंग यूनिट में जाकर जब वह अपनी प्रक्रिया पूरी कर वापिस संयंत्र में आता है तो उसका तापक्रम अधिक होजाता है तब इसे मुख्य संयंत्र के हॉट वेल में पुन: डाला जाता है और यह पानी फिर से चीलर मशीनों को दिया जाता जहां पर पानी को पुन: ठंडा करके मुद्रण अनुभाग की मशीनों, एयर वॉशर और एयर हेंडलिंग यूनिट को भेजने से पूर्व कोल्ड वेल में डाला जाता है और इस प्रकार से यह चक्र चलता रहता है।

वातानुकूलित संयंत्र निर्बाध गति से अपना कार्य करे इसके लिए विद्युत सब स्टेशन भी लगाया गया है। इसकी क्षमता 11 KV/3.3 KV और 11 KV/440 Volt है।

हमारी एक अन्य यूनिट इंक फैक्टरी की मशीनों को ठंडा पानी तथा एयर कंडीशन देने के लिए एक और वातानुकूलित संयंत्र इंक फेक्टरी के पास स्थापित है। यहाँ पर चार कुलिंग टॉवर, तीन एयर हेंडलिंग यूनिट, एक स्क्रू चिलर तथा दो रेसीप्रीकेटिंग रेफ्रिजेरेशन चिलर लगे हुए हैं जिनके द्वारा इंक फैक्ट्री मशीनों को ठंडा पानी (चिल्ड वॉटर) और ठंडी हवा प्रदाय की जाती है।

इंक फैक्ट्री का यह वातानुकूलन संयंत्र निर्बाध गति से अपना कार्य करे इसके लिए विद्युत का एक सब स्टेशन यहाँ भी लगाया गया है। इसकी क्षमता 11 KV/440 Volt है। वर्तमान में एक नई इंक फैक्ट्री बिल्डिंग का निर्माण भी किया जा रहा है इसमें भी एक वातानुकूलन

संयंत्र को स्थापित किया जा रहा है जिसमें 200 200 TR केपेसिटी के चाक स्क्रू चिलर लगाए जा रहे है । यहाँ पर सभी आधुनिकतम उपकरणों के साथ इंक फैक्ट्री ऑफिस भवन में एक नई व्ही.आर.व्ही. (VRV) सिस्टम का ए.सी. लगाया गया है, जिससे बिजली की खपत बहुत कम होती है यह सिस्टम की मुख्य विशेषता है। मुख्य स्याही कारखाने में सर्दी के मौसम में एवं बाहर का तापमान जब 24 डिग्री सेल्सियस या इससे कम हो जाएगा तब यह वातावरण की मात्र फ्रेश ऐयर से ही चलेगा इस प्रकार से इससे भी बिजली की खपत बहुत कम होने की संभावना रहेगी। मेरे पूरे संयंत्र को सुचारु रुप से प्रचालन के लिए वातानुकूलित के अधिकारी, प्रचालक, उपकरण मैकेनिक, प्रशीतलन मैकेनिक, इलेक्ट्रिशयन, फिटर, पेंटर, वेल्डर और प्लमबर आदि की टीम 24 घंटे सतत् अपने कार्य में लगी रहती है।

इसके अतिरिक्त एक कार्य मेरे कर्मचारियों का और है जिसकी ओर मैं आप सभी का ध्यान आकर्षित करना चाहती हूँ वह है पूरे संस्थान के अन्य क्षेत्र जैसे कार्यालय के समस्त अनुभागों, डिस्पेन्सरी, केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के अनुभागों, बैरक, श्रम कल्याण केंद्र और चामुंडी अतिथि गृह में कंडीशंड हवा और पानी देने के लिए ऐयर कंडीशनर, डीप फ्रीजर, रेफ्रिजेरेटर, वाटर कूलर और ऐयर कूलर की व्यवस्था करना तथा उनका समुचित रखरखाव करना भी है। इस प्रकार से आपने मेरे क्षेत्र वातानुकूलन संयंत्र की यात्रा की। अब तो आप समझ ही गए होंगे कि मैं पूरे बैंक नोट मुद्रणालय संस्थान की एक माँ के समान हूँ। मुझसे संबंध हमेशा मधुर रखना हो या मेरे जीवन को और अधिक समय तक बनाए रखना हो तो ''कृपया वातानुकूलित क्षेत्र के सभी खिड़की दरवाजे बंद रखे''। पुन: पधारे धन्यवाद!

उत्पादन लक्ष्य

पुरस्कृत कविता

विनायक राव जाधव
वरिष्ठ प्रचालक (वातानुकूलन)

हम बनाएं अपना उत्पादन लक्ष्य,
हमारी योजना ऐसी हो।
संरक्षा से काम करें हम,
दुर्घटना मुक्त वातावरण हो।
हम बनाएं अपना उत्पादन लक्ष्य...
संरक्षा उपकरणों का उपयोग,
निरंतर कारखाना में सब ओर हो।
लक्ष्य को हम प्राप्त करें,
और सफलता हमारी निश्चित हो।
असंभव को भी संभव बना दे,
ऐसी इच्छा शक्ति हो।
हम बनाएं अपना उत्पादन लक्ष्य...
आर्थिक आपातकाल के दस दौर में,
निगम में परचम हमारा हो।
संरक्षा से काम करें हम,
दुर्घटना मुक्त वातावरण हो।
हम बनाएं अपना उत्पादन लक्ष्य...
महाप्रबंधक सा. का कुशल नेतृत्व,
और सेना का भी साथ हो।
गर्व करें हम अपने उपर जब,
मंत्रालय में बीएनपी की जय जयकार हो।
हम बनाएं अपना उत्पादन लक्ष्य...
संरक्षा दिवस की इस वेला पर,
अपना यह संकल्प हो।
संरक्षा उपकरणों से काम करें हम,
दूसरा न कोई विकल्प हो।
हम बनाएं अपना उत्पादन लक्ष्य,
हमारी योजना ऐसी हो।
संरक्षा से काम करें हम,
दुर्घटना मुक्त वातावरण हो।

बधाई / शुभकामनाएं

सुश्री गीतांजली बंड पिता श्री मनोज बंड ने नेपाल डोजबाल फेडरेशन द्वारा आयोजित नेपाल- इंडो डोजबाल चैम्पियनशीप 2018 में भारत का प्रतिनिधित्व किया।

इसी प्रकार उनके द्वारा 63 वें राष्ट्रीय स्कूल खेल- 17-18 में नेट बाल (गर्ल्स) अंडर-19 में राष्ट्रीय स्पर्धा में मध्यप्रदेश का प्रतिनिधित्व किया।

सुश्री वर्षा पटेल आत्मजा श्री लीलाधर पटेल, आपरेटन (विघुत) ने प्रोफेशनल एक्जामिनेशन बोर्ड, भोपाल की पटवारी भर्ती परीक्षा में चयनित होकर ओबीसी श्रेणी में म.प्र. में मेरिट में दूसरा स्थान प्राप्त किया।

खतरों से घिरता हमारा पर्यावरण

पी.के. मुदगल
सहा.प्र. (सिविल)

क्या आपने सोचा है कि किन कारणों से मौसम अचानक बदलता जा रहा है।

मौसम में तेज गति से होते बदलाव ने कई सवाल पैदा कर दिए हैं। आखिर किन कारणों से ऐसी स्थितियां बन रही हैं।

ग्लोबल क्लाइमेट रिस्क इंडेक्स सूची के अनुसार, भारत उन दस देशों में शामिल है, जो बदलते प्राकृतिक वातावरण से सबसे अधिक प्रभावित है। सिर्फ भारत ही नहीं, पूरी दुनिया में मौसम को लेकर अस्थिरता और असमंजस बना हुआ है। गर्मियों में तेज बारिश, बारिश में तेज उमस, कहीं बाढ़-कहीं सूखा, घटती सर्दियां, बढ़ता पृथ्वी का तापमान, ये सब चिंता के विषय बने हुए हैं, जिसे एक्सट्रीम वेदर इवेंट्स कहा जाता है। मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार 1906 से 2005 के बीच पृथ्वी की सतह का तापमान 0.6-0.9 डिग्री बढ़ा है। ये तापमान लगातार बढ़ रहा है, जिसका असर दुनियाभर में बाढ़, भू-स्खलन, ग्लेशियरों के पिघलते आदि के रुप में देखने को मिल रहा है। 2052 में ठंड के दिनों का तापमान 3.2 डिग्री और गर्मी का 2.2 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ने की आशंका है। वर्षा में भी 15-20 प्रतिशत की कमी हो सकती है। बारिश का समय भी अब नियत नहीं रहेगा। इन सब बदलावों के कुछ विशेष कारण हैं।

इसलिए बन रहीं ऐसी स्थितियां :- प्रदूषण और पेट्रोलियम के कारण ग्रीन हाऊस गैसों में लगातार इजाफा हो रहा है। इसका सीधा असर कृषि पर पड़ रहा है। तापमान बढ़ने से वाष्पीकरण भी बढ़ता है, जिससे मिट्टी में नमी कम हो जाती है। इसी कारण जमीन के जल का अंधाधुध दोहन बढ़ रहा है और भू-गर्भीय जल का स्तर तेजी से नीचे जा रहा है। इससे वर्षा के समय, मात्रा, वाष्पीकरण आदि प्रभावित हो रहे हैं। मिट्टी में नमी की कमी से तापमान और अधिक बढ़ जाता है, जिससे सूखे की स्थिति बनती है। गौरतलब है कि भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में भू-गर्भ जल का घरेलू उपयोग 80 प्रतिशत और शहरी क्षेत्रों में 50 फीसदी उपयोग हो रहा है। सिंचाई की कुल जरुरत का लगभग 50 प्रतिशत इसी से पूरा होता है। भारत के कुल सिंचित उत्पादन का लगभग 70-80 प्रतिशत भू-गर्भ जल से ही उत्पादित होता है। इसके अलावा बढ़ता अतिक्रमण और समुद्री जल के वाष्पीकरण से बाढ़ और अधिक व बेमौसम वर्षा की स्थिति निर्मित हो रही है। पिछले साल चेन्नई में बाढ़ के यही कारण सामने आए।

हवा हो रही गर्म, बढ़ रहा समुद्र का जल स्तर 1)हवाओं के तापमान में वृद्धि :- 'एयर टेम्परेचर' में बढ़ोतरी हो रही है। इसका नतीजा सूखा, गर्म हवाएं, फसलों की बर्बादी, जंगल में आगजनी जैसे रुपों में देखने को मिल रही है। इन हवाओं से अमेरिका के दक्षिणी भाग अधिक प्रभावित हैं। यही हाल समुद्री हवाओं के तापमान बढ़ने का है। गौरतलब है कि दुनिया के 70 फीसदी हिस्से पर समुद्र हैं। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि ये जलवायु परिवर्तन को किस हद तक प्रभावित करती हैं। ये हवाएं बाढ़ और अनियमित बारिश जैसी घटनाओं का कारण बनती हैं।

2)आर्कटिक महासागर में बर्फ का घटना :- सैटेलाइट इमेजेस से पता चलता है कि आर्कटिक महासागर में बर्फ से ढका क्षेत्र किस तरह सिकुड़ता जा रहा है। ये पिछले 30 सालों से हो रहा है। सितंबर में ये बर्फ अपने सबसे निचले स्तर पर होती है। विभिन्न रिसर्च में कहा जा रहा है कि 2100 तक आते-आते आर्कटिक पूरी बर्फ खो सकता है। जबकि अन्य का मानना है कि ऐसा कुछ ही दशकों में हो सकता है। इसी तरह ग्लेशियर्स का लगातार पिघलता भी चिंता का विषय है। यह जलवायु परिवर्तन के बड़े सूचक हैं।

3)समुद्री जल स्तर का बढ़ना :- 15-90 सेमी. ऊंचा हो जाएगा समुद्रतल जिससे 9 करोड़ लोगों को बाढ़ का खतरा होगा। ग्लेशियर्स के पिघलने से हाल ही के सालों में समुद्र का जल स्तर तेजी से बढ़ा है। साथ ही पानी का तापमान भी बढ़ा है। इसका नतीजा तूफान, बाढ़ आदि के रुप में देखने को मिल रहा है। गौरतलब है कि दुनिया के 10 बड़े शहरों में आठ समुद्र के किनारे बसे हैं। ये आपदाएं

इन्हें लगातार प्रभावित कर रही हैं। इसी के साथ हवाओं में समुद्री जल के भाप बनकर मिलने से उमस भी बढ़ रही है। गर्मियां खत्म होने के बाद भी लंबे समय तक उमस बनी रहती है। 150 सालों में दुनियाभर में जितना तापमान बढ़ा है, उससे दोगुना या उससे ज्यादा तापमान तिब्बत और हिमालयी क्षेत्रों में बढ़ा है।

04)तापमान में इजाफा .- समुद्री सतह पर जल का तापमान भी अनियमित मौसम का बड़ा कारण है। प्रकाश से समुद्री जल का तापमान इस हद तक बढ़ जाता है कि इस उष्मा को समुद्र हवाओं के रुप में उत्सर्जित कर रहा है। इससे हवाओं का तापमान भी बढ़ रहा है। ये हवाएं तूफान और ऊष्ण कटिबंधीय चक्रवात का कारण है। दरअसल समुद्र लंबे समय तक उष्मा को उत्सर्जित करता है। ये प्रक्रिया जलवायु को स्थिर बनाती है। लेकिन बाहरी वातावरण सिस्टम को प्रभावित कर रहा है।

5)ग्रीन हाउस गैसें .- ये गैसें जलवायु में तेजी ला रही है। इन गैसों में कार्बनडाई आक्साइड नाइट्रस ऑक्साइड, मीथेन क्लोरो कार्बन ओजोन आदि शामिल हैं। कार्बनडाई आक्साइड का उत्सर्जन पिछले 10-15 सालों में 40 गुना तक बढ़ा है। इंडस्ट्रीलाइजेशन के बाद से इसमें सौ गुना का इजाफा हुआ है। दरअसल इन गैसों का का हमारी आम जिदंगी से लेना देना है फ्रिज, एसी, कम्प्यूटर, स्कूटर, कार आदि से इन गैसों का उत्सर्जन होता है। कार्बनडाई आक्साइड के उत्सर्जन का सबसे बड़ा स्त्रोत पेट्रोलियम है।

2019 में कर रहे हैं टैक्स बचाने की प्लानिंग, तो आपको आयकर की ये धाराएं मालूम होनी चाहिए

विकास सिंह
सहायक प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)

नए वर्ष की शुरुआत के साथ ही करदाता उन तमाम निवेश विकल्पों की तलाश में जुट जाते हैं जो उनका टैस बचा सकें। जनवरी के शुरु होते ही निवेशकों के मन में यह उधेड़बुन शुरू हो जाती है, क्योंकि 1 अप्रैल से पहले उनको अपने नियोक्ता को टैस बचत से जुड़े सारे कागजात देने होते हैं। ऐसा न करने की सूरत में उनका नियोक्ता सैलरी से टैस काट लेता है, हालांकि वो इस कटौती को आईटीआर भरने के बाद वापस भी पा सकते हैं। आमतौर पर लोगों को आयकर कटौती के संबंध में सिर्फ 80उ के बारे में जानकारी होती है, लेकिन इसके अलावा भी आयकर की अन्य धाराएं हैं जिनके बारे में लोगों को कम जानकारी होती है। हम अपनी इस खबर में आपको इन्हीं के बारे में जानकारी दे रहे हैं।

80 सी के फायदे: पीपीएफ, एनएससी, ईएलएसएस, बैंक और पोस्ट ऑफिस में पांच साल की एफडी के साथ-साथ स्कूल और ट्यूशन फीस के जरिए आप हर साल करीब 1,50,000 की कर छूट का लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यह छूट आयकर की धारा 80सी के तहत मिलती है।

80 डी के फायदे: आप आयकर की धारा 80डी का भी लाभ ले सकते हैं जिसमें आप खुद का और अपने परिवार का चिकित्सा बीमा करवा सकते हैं। इसके जरिए आप सालाना 25,000 से 30,000 (सीनियर सिटिजन) की बचत कर सकते हैं। अगर करदाता अपना चिकित्सा बीमा, अपनी पत्नी और बच्चों का चिकित्सा बीमा कराता है तो उसे 80डी के तहत कर छूट का अधिकार मिलता है

80 डी डी के तहत फायदा: अगर कोई विकलांग व्यक्ति आप पर आश्रित है तो विकलांग आश्रित के चिकित्सा उपचार पर भी 80डीडी का फायदा उठाया जा सकता है। इन आश्रितों में माता-पिता, जीवनसाथी, बच्चे, भाई और बहन जो भी आप पर आश्रित हों। इस सेशन के अंतर्गत कुल कटौती की सीमा 75,000 रुपए सालाना है।

80 डीडीबी के तहत फायदा: अगर कोई व्यक्ति किसी विशेष बीमारी के उपचार में खर्च करता है तो उसे 80डीडीबी के तहत कर लाभ मिलता है। माता-पिता, बच्चे, और भाई-बहन। एचयूएफ के मामले में इस कटौती का लाभ किसी भी सदस्य की ओर से किए गए व्यय के लिए किया जा सकता है। कटौती वास्तव में खर्च की गई राशि या 40,000 रुपये के बराबर हो सकती है।

80सीसीडी के फायदे: साल 2015-16 के बजट में नेशनल पेंशन सिस्टम में निवेश की सीमा एक लाख रुपए से बढ़ा कर डेढ़ लाख रुपए कर दी गई थी। एनपीएस में धारा 80सीसीडी के तहत 1,50000 रुपए का निवेश कर डेढ़ लाख की कटौती का लाभ मिलता है।

80 जीजी के तहत फायदा: आमतौर पर एचआरए आपकी सैलरी का एक हिस्सा होता है। अगर ऐसा नहीं होता है तो आप आयकर की धारा 80जीजी के तहत इसके लिए दावा (लेम) कर सकते हैं। इसके तहत अधिकतम 60,000 की टैस छूट प्राप्त की जा सकती है।

सोच से तय होती है सफलता और विफलता

(सेलेब्रिटी लेखक, निर्देशक- राजकुमार हिरानी द्वारा सफलता सूत्र)

संकलन
मो. नवाज मियां
सहा.प्रबंधक (वि. एवं ले.)

प्रेरणा :- हमें कोई दूसरा व्यक्ति दुखी नहीं करता, बल्कि हम खुद ही अपने दु.ख का कारण होते हैं

स्कूल, कॉलेज और प्रतियोगी परीक्षाओं के परिणाम आ रहे हैं । स्टूडेंट्स दबाव में हैं । मेरे बेटे को भी 12 वीं के बाद अब अपने कॅरियर और फ्यूचर के बारे में सोचना है। 'थ्री इडियट' जैसी फिल्म बनाने के बाद क्या मैं किसी को कंट्रोल करुंगा ? मैंने कहा - जो तेरा मन करे तू कर । मैंने पढ़ाई को लेकर कभी दबाव नहीं डाला । मैंने उससे कहा तुम एक साल छुट्टी ले लो 12 वीं के बाद । स्कूल के बाद अगर आप कॉलेज में भागने लगोगे तो सीखने का कब मौका मिलेगा । मैंने उसे कहा शार्ट फिल्में बना, थिएटर कर, गाना सीख, बिजनेस समझना है तो उस दिशा में जा । बच्चों को मौका देना चाहिए कि वे खुद अपनी जिंदगी की खोज कर सके। 50 चीजें अपने हिसाब से करेगा तो फिर देखो कितना निखर के निकलेगा आपका बच्चा । हमारे यहां तो मौका ही नहीं दिया जाता। जिस फील्ड में ज्यादा पैसा दिखता है, उसी तरफ बच्चों को मोड़ देते हैं।

मैं अपनी बात बताता हूं। नागपुर में पला-बढ़ा हूं। 12 वीं तक मैं कुछ नहीं कर पाता था । मेडिकल और इंजीनियरिंग में प्रवेश ही नहीं मिला। कॉमर्स में एडमिशन मिला तो वहां कॉलेज जाना ही नहीं पड़ता था । वहां से मेरी लाइफ सुधरी । मैं थिएटर करने लगा, हर किस्म का सिनेमा देखने लगा । तब मुझे समझ आया कि मेरी रुचि किसमें है । फिल्म इंस्टीट्यूट पंहुचकर पहले साल निर्देशन के स्टूडेंट के तौर पर अप्लाई किया, लेकिन एडमिशन नहीं हुआ । 8 सीट के लिए 2 लाख एप्लीकेशन । किसी नेकहा कि एडिटिंग में ज्यादा लोग अप्लाई नहीं करते इसमें जाओ। पता भी नहीं था कि एडिटिंग होती क्या है । सिलेक्शन हो गया । एडिटिंग के साथ मैंने इंस्टीट्यूट में पुरानी फिल्में देखी। निर्देशन में आया तब भी मेरेअंदर का फिल्म एडिटर हमेशा जिंदा रहता है । कैमरे के पीछे भी वह मेरी विशेषता बन गई । अब पटकथा लिखते हुए मैं खुद ही अतिरिक्त पंक्तिया काट देता हूँ। शूटिंग के दौरान गलती तभी दिख जाती है।

मेरा मानना है जिंदगी की सफलता और असफलता सोच पर निर्भर है । मैं आज भी अपनी जिंदगी फ़्लेश बैक में रख कर देखूं तो मुझे कभी नहीं लगा कि कोई फेलियर था कभी । हम शायद लोगों के जेहन में नहीं थे, लेकिन एडिटिंग या कुछ और करतेथे तो हम खुश रहतेथे। देखिये, हमने कुछ आजमाया, लेकिन उसमें सफलता नहीं मिली या बात नहीं बनी । इससे तो सीख ही मिलती है न कुछ बेहतर करने की । मैंने तो महसूस किया कि फेलियर से मुझे नहीं बल्कि दूसरे लोगों को ज्यादा तकलीफ होती है । मुझे याद है मैं जब नया-नया मुंबई आया था तब मैं और मेरा दोस्त एक कमरे में रहते थे पेइंग गेस्ट । एक बार मेरे एक रिश्तेदार आए तो कहने लगे बेटा तुम ऐसे रहते हो, बहुत मुश्किल है तुम्हारी जिंदगी यहां । फिर लगने लगा कि कुछ कमी है । उसके पहले तक तो हम बड़े मजे से रहते थे। नज़रिया महत्वपूर्ण है । आप सोचोगे कि बहुत मुश्किल टाइम से गुजर रहे हो तो वह वक्त खुद ही मुश्किल हो जाएगा । आपको लगता है कि आप मजे कर रहे हो तो कोई दु.ख नहीं है। दो चीजे है जिंदगी में एक, अगर आपकी हैल्थ ठीक है और आप एकदम बेहद गरीब नहीं हो। मतलब खाने-कमाने वाले हो तो सब ठीक है । इच्छाएँ तो अनंत है । मेरी जिंदगी गांधीजी से बहुत प्रभावित है । मैंने जब एटनबरों की फिल्म देखी तो अंदर तक हिल गया । उनके व्यक्तित्व से प्रभावित हुआ और फिल्म से भी । जब फिल्म इंस्टीट्यूट गया तो वहां कई किताबें पढ़ी । उन्हें गाली देना फैशन बन चुका था । मैं उन पर फिल्म बनाना

चाहता था, लेकिन अलग तरह से। एक ख्याल आया कि गांधीजी आज होते तो क्या सोचते, लेकिन छह महीने की मेहनत के बाद भी कहानी नहीं बनी। फिर एक बात दिमाग में बैठी की वे हर काम इनोवेशन से करतेथे। तब मुन्नाभाई बनी । उनका प्रभाव मेरी फिल्मों में आज भी किसी न किसी रुप में कायम है।

मैंने और लेखक अभिजात जोशी ने तय किया था कि भले ही कम फिल्में बनाए पर बनाएंगे सिर्फ यूनिक कहानियाँ। आजकल हर किस्म का सिनेमा स्वीकारा जा रहा है। पहले लोग डरते थे प्रयोग से। हमने कभी नहीं सोचा था की 'पीके' चीन जाएगी। मेरी फिल्में पारम्परिक कमर्शियल फिल्में नहीं होती।

हमने उल्टी-सीधी फिल्में ही बनाई हैं हमेशा। मुझे याद है हम मुन्ना भाई बना रहे थे तब सेट पर एक दोस्त आया। उस समय मैं एक दृश्य शूट कर रहा था, जिसमें गांधीजी कह रहे थे 'ज्यादा लेट नहीं बैठनेका, घर निकलो।' उसने कहा पागल हो गया है तू, ये गांधीजी हैं, फादर ऑफ नेशन हैं। लोग नाराज हो जाएंगे। मार डालेंगे। उस दिन डर लगा, लेकिन हम तो अपने दृढ़ विश्वास से फिल्म बना रहेथे। 'पीके' को भी शुरुआत में मूर्खतापूर्ण विचार कहा गया। हम तर्कपूर्ण ढंग से नहीं सोचते। ज्यादा सोचते तो बना ही नहीं सकते फिल्म कभी। मेरी फिल्में थोड़ी देर से आती हैं, लेकिन अच्छा काम करने में समय लगता है। फिल्म का आंकलन कारोबार से नहीं, बल्कि लोगों की उपस्थिति फिल्म की सफलता का मापदंड होना चाहिए। शोले, मुगल-ए-आज़म उनकी व्यावसायिक सफलता के कारण अच्छी नहीं लगी थी, वे तो फिल्में ही अच्छी थी।

कुछ लोग कहतेहैं कि मैं हर बुरी बात में भी कुछ अच्छाई ढूंढ़ लेता हूँ, लेकिन आप करके देखिए लाइफ में होता ही यही है। पिक द बेस्ट एंड लीव द रेस्ट। हमारा दिमाग कहानियां बनाता है। हमें कोई और दुखी नहीं करता बल्कि हम खुद ही अपने दु:ख का कारण हैं। जैसे, आपने मुझे फोन किया और मैं कुछ काम में हूं और मैंने फोन नहीं उठाया, लेकिन आपने सोचा वो मेरा फोन नहीं उठा रहा, बड़ा आदमी बन गया है। मैंने आपको दुखी नहीं किया, आप खुद अपने दु:ख का कारण है, क्योंकि कहानी तो आपने खुद बनाई। आप किसी ओर की परिस्थिति को समझेंगे तो आपको पता चलेगा कि कोई भी जान-बूझकर किसी का बुरा नहीं करता। हालात बन जाते हैं। आपके पास एक ही विकल्प है कि आप सारी नकारात्मकता से दूर हो जाएं। मुझे नहीं लगता है कि सकारात्मक सोच वाले लोग कम हैं। आपको आपके जैसे लोग मिलते रहते है। मैं सिर्फ अपने कम्फर्ट ज़ोन के लोगों के साथ ही काम नहीं करता बल्कि अन्य लोगों के साथ भी काम करता हूं। आप नए लोगों से जुड़ते हैं, विचार मिलते हैं और आप साथ काम करने लगते हैं। आप नेगेटिव ज़ोन में होतो कोई भी चीज आपको सही नहीं लगेगी। आप रिजेक्ट करोगे, ईगो में रहोगे। किसी की बात तक नहीं सुनोगे। किंतु अगर आप स्पंज की तरह हैं और खुशियां बटोरना चाहते हैं तो आपको सब कुछ मिलेगा। जरुरी नहीं कि किसी स्कूल से सब सीखने को मिले। 'जादू की झप्पी' क्या थी ? मेरे डैड का मानना था कि अपनी बात गले लगाकर समझाओ। किसी के दु.ख में आप उसको झप्पी दे दो उससे बड़ा मरहम और क्या होगा। सही सच साबित हुआ भी। किसी ने कहा की हम प्यार तो करते हैं पर उसे जाहिर नहीं करते। मैंने भी सोचा कि कही मैं जताने में कमी तो नहीं कर रहा। अगले ही दिन से मैंने अपने ऑफिस और अन्य लोगों के अच्छे काम ज्यादा सराहे। उन्हें अपने मन की बात कहीं। आप बाहर के लोगों की सराहना तो कर देते है, लेकिन घर के लोगों को भूल जातेहैं, जबकि वे आपके साथ हर परिस्थिति में खड़े रहते हैं।

राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता, (थ्री इडियट्स, मुन्नाभाई एमबीबीएस जैसी फिल्मों के निर्देशक/लेखक)

माननीय महोदया तृप्ति पी. घोष, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, एस.पी.एम.सी.आई.एल. और निदेशक महोदय (तकनीकी), निदेशक महोदय (वित्त) का बी.एन.पी. आगमन

संरक्षा दिवस-2018

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, देवास की अर्द्धवार्षिक बैठक

राजभाषा पखवाड़ा-2018

सतर्कता सप्ताह -2018

स्वच्छ भारत पखवाड़ा - 2018

सेवा निवृत्ति सम्मान समारोह

नवागत का स्वागत

श्री जतिन्दर सिंह
अधिकारी (वित्त एवं लेखा)

श्री सौरभ प्रजापत
अधिकारी (वित्त एवं लेखा)

सेवानिवृत्त

श्री विजय किशोर सक्सेना
सहायक प्रबंधक (तकनीकी नियंत्रण)

पदोन्नतियां

श्री. एस. महापात्र
मु. प्रबंधक से
उप महाप्रबंधक

श्री अशोक कुमार
मु. प्रबंधक से
उप महाप्रबंधक

श्री विनोद जी. महरिया
उप प्रबंधक से प्रबंधक
(मानव संसाधन)

श्री.एस. बेनर्जी
सहा. प्रबंधक से
उप प्रबंधक (तक.)

श्री सुभाष कुमार
अधिकारी से
सहा. प्रबंधक (मा. सं.)

श्री आर.पी. सिंह
अधिकारी से
सहा. प्रबंधक (आई.टी.)

श्री पी. पी. कुलकर्णी
अधिकारी से
सहा. प्रबंधक (तकनीकी)

बी.एन.पी. में स्थानांतरित

श्री मुकेश दुबे
प्रबंधक (तक.)
एस.पी.एम., होशंगाबाद

डॉ. घनश्याम जारेडा
वरि. सतर्कता अधिकारी
एस.पी.एम., होशंगाबाद

मो. नवाज़
सहा. प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)
निगम मुख्यालय, नई दिल्ली

बी.एन.पी. से स्थानांतरित

श्री आर.सी मोटवानी
अपर महाप्रबंधक एवं विभागाध्यक्ष
नोएडा मिन्ट

श्री सुनील यादव
प्रबंधक (तक. नियंत्रण)
आई.एस.पी., हैदराबाद

"भ्रूण हत्या एक अभिशाप"

श्रीमती स्नेहा आर्य पोद्दार
तकनीशियन (स्या. कार.)

सृष्टि बनाने वाले प्रणेता ने पृथ्वी पर दो समान रुपों की रचना की जिनके कर्म , नियति, संरचना स्वरुप सभी समान तो थे ही अपितु इनका अनुपात भी बराबर था। समय के साथ रचियता की एक रचना विनाश की ओर अग्रसर हुई, जिसका भुगतान या यूं कहे कि जिसका खमियाजा दूसरी रचना को अपने अस्तित्व के अन्त से चुकाना पड़ा। रचयिता की दोनों ही रचनाएं थी तो अद्भूत किन्तु एक अधिनायकवाद के प्रलोभन में आकर दूसरी रचना को दबाने लगी।

पहली रचना थी नर या आदमी या पुरुष दूसरी व सुन्दर रचना नारी या औरत महिला। हमारे समाज में इन दोनों का समान अनुपात नहीं है। पुरुष प्रधान इस भारत देश में महिलाओं को दबाने और उन पर अत्याचार करने की कठोर 'परपंरा' या यूँ कहे कि अपनी अहमियत दिखाने की कठोर विधि रही है। जिनमें से एक है 'भ्रूण हत्या' माता के गर्भ में पल रहें भ्रूण को शल्य क्रिया या मेडिसिन द्वारा नष्ट कर देना भ्रूण हत्या कहलाता है।

आमतौर पर यह देखा गया है कि भ्रूण हत्या जैसा कुकृत्य तब किया जाता है जब पालकों को पता चल जाता है कि भ्रूण में पल रहा शिशु 'पुत्री' हैं। भ्रूण हत्या भारत देश में एक अपराध है। किन्तु अभी भी कई क्षेत्रों में ये अपराध निरंतर किया जा रहा है।

भ्रूण हत्या के कारण :-

1.पुत्र की चाह - देखा गया है कि परिवार में पुत्रियां अधिक होने व पुत्र न होने के कारण अपने परिवार को पूरा करने वंश को आगे बढ़ाने की इच्छा के कारण पुत्री लिंग के भ्रूण को नष्ट करवा दिया जाता है। वंश बढ़ाने के लिए पुत्री न होते हुए भी कई बार पुत्री लिंग के भ्रूण को खत्म करवा दिया जाता है।

2.महँगाई व गरीबी - परिवार में सदस्य अधिक होने पर कभी-कभी एक और पुत्री का खर्च ना उठा पाने पर भी पालक द्वारा ये कुकृत्य करवा दिया जाता है। पुत्री होने पर उसकी शिक्षा विवाह आदि पर होने वाले खर्च के बारे में सोच कर पुत्री लिंग के भ्रूण को खत्म करवा दिया जाता है।

3.कुछ प्रकरणों में देखा गया है पालकों को बच्चा नहीं चाहिए होता है। ये उनकी अवांछित संतान होती है तो भी पालकों द्वारा भ्रूण हत्या करवा दी जाती है। अगर असमय गर्भधारण हो जाता है जिसके लिए माता-पिता दोनों ही तैयार नहीं होते है इस कारण भी भ्रूण हत्या अंग्रेजी में Abortion करवा दिया जाता है।

भ्रूण हत्या के दुष्परिणाम .–

1.लड़कों की अपेक्षा लड़कियों का अनुपात कम होना।
2.समाज में विसंगति फैलना।
3.सामाजिक संतुलन बिगड़ना।
4.अपराधों में वृद्धि होना।
5.शारीरिक विकास (महिला) में समस्या आना।

उपरोक्त कारणों से अभिप्राय है कि भ्रूण हत्या जो प्राय: पुत्री लिंग की होती है इससे भारत व भारत जैसे कई देशों में यह देखा गया है कि लड़कों की अपेक्षा लड़कियों का अनुपात कम है। जिससे कई जाति समाज में विवाह के लिए लड़किया नहीं मिलती है। बिहार प्रदेश की एक घटना है जहां लड़की का अनुपात कम होने के कारण एक लड़की के कई विवाह गैर कानूनी रुप से करवाए गये है। ऐसे विवाह का कारण केवल 'संतानोत्पत्ति' होता है। जिससे समाज में नारी पर होने वाले अत्याचारों और कुकर्मो में वृद्धि होती रही है। समाज में लड़कियों के कम होने से छेड़-छाड़, बलात्कार, अश्लील हरकतें जैसी घटनाएं अब हमारे देश में आम है। लड़कियों के अनुपात में कमी पुरुष समाज को गलत भावनाओं की ओर प्रेरित करती है। जिससे लड़कियों को लेकर अपराधों की गिनती बढ़ती चली जा रही है।

भ्रूण को नष्ट करवाने के बाद उसके अंश गर्भाशय (Uterus) में रह जाने पर (Tumer/Cancer) ट्यूमर, कैंसर जैसी बिमारियां होने का खतरा रहता है। कई केसों में भ्रूण नष्ट करवाने के बाद महिलाएं फिर से माँ नहीं बन पाती है। या माँ बन पाने में उन्हें कई दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। भ्रूण जो कि एक जीवित अंश है उसको मारने का पाप झेलना पड़ता है। एक कवि की सुन्दर पंक्तियाँ है -

जाँच कराई भ्रूण की, निकली मादा जात।
खत्म कर वही नार को, दिखला दी औकात॥

भ्रूण हत्या एक अपराध ही नहीं मनुष्य के लिए बहुत बड़ा पाप भी है। किसी सजीव की हत्या करने का अधिकार स्वयं उसके माता-पिता को भी नहीं होना चाहिए। हमारे देश में भ्रूण हत्या या लिंग चयन जैसे अपराधों के लिए अब कड़ा कानून है। लिंग चयन कर भ्रूण के नष्ट करवाने पर इससे सबंधित सभी सदस्य दोषी होते हैं। जिनमें प्रत्येक को 1-1 लाख रुपये जुर्माना व 5 साल की जेल होती है। ऐसे चिकित्सक का लाइसेंस रद्ध कर दिया जाता है।

पुत्री लिंग भ्रूण हत्या को रोकने के लिए सरकार द्वारा 'बेटी बचाओ' 'लाड़ली लक्ष्मी' जैसी योजनाएँ साकार रुप ले रही है। सरकार द्वारा प्रभुखतः लड़कियों को छात्रवृत्ति से लेकर विवाह, रोजगार आदि योजनाओं पर खर्च किया जा रहा है। साथ ही डॉक्टरों द्वारा ऐसी दंपति जिन्हें बच्चा नहीं चाहिए उन्हें गर्भ निरोध, कंडोम, कॉपर टी, टी टी ऑपरेशन जैसे सुझाव दिये जाते हैं।

महिलाओं की बात करें अगर तो चाहे वो कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी हो या लोकसभा स्पीकर सुमित्रा महाजन, एस.बी.आई बैंक की एम.डी. ऊषा कृष्णन सुब्रम्णयम या ICICI बैंक की CEO चंद्रा कोचर या पेप्सी की CEO इंद्रा नूयी हो या टेनिस प्लेयर, सानिया मिर्जा हो या बेंडमिंटन प्लेयर सानिया नेहवाल या अंतरिक्ष यात्री कल्पना चावला हो या ओलंपिक पदक विजेता कर्णम मल्लेश्वरी हो या अरुंधति रॉय, मेहरुनिसा परवेज, सूर्यबाला, मृदुला गर्ग जैसी लेखिका हो या किसी पेंटर की पेंटिग मोनालिसा क्यूँ ना हो हर जगह हर क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका सराहनीय है। उनके काम का डंका बजता है। फिर क्यूँ हमें घर में बेटी नहीं चाहिए। दूध पिलाने के लिए माँ चाहिए। खाना बनाने के लिए किचन में पत्नी चाहिए। काम में हाथ बटाने के लिए बहन चाहिए। पर बेटी नहीं चाहिए। भ्रूण हत्या जैसे घोर अभिशाप का सबसे ज्यादा असर महिला समाज पर ही हुआ। इसलिए हम सभी को ऐसी कुरीतियों को खत्म करना होगा। ऐसी संकुचित मानसिकता को बदलना होगा। ऐसा सामाजिक वातावरण बनाना होगा जिससे कभी कोई माता-पिता भ्रूण हत्या जैसा घिनौना अपराध करने की भी ना सोचें।

बहुत कुछ कहते हैं आपके फेसबुक स्टेटस

व्ही.जी. महरिया
प्रबंधक (मा.सं.)

आपकी फेस बुक पोस्ट आपके जीवन का आईना है। आप कितना भी बचाओ, आपके स्टेटस आपके व्यक्तित्व और जीवन की चुगली कर ही देतेहैं । शोधकर्ताओं की एक टीम ने एक अध्ययन में बताया कि आपके फेसबुक अपडेट्स आपके बारे में बहुत कुछ कहतेहैं। इस शोध के तहत 555 युवाओं का ऑनलाइन सर्वे किया गया। इसमें वे शामिल थे जो फेसबुक के नियमित यूजर्स हैं ।

1.जो लोग लगातार हर सामाजिक घटना या अजीबो-गरीब व्यक्तियों पर पोस्ट्स डालते रहते हैं वो मूलत: बहिर्मुखी लोग होतेहैं।

2.ओपन इंडिविजुएल्स - ये ऐसे लोग हैं जो अपनी व्यक्तिगत सूचनाएं लोगों से बांटने में ज्यादा रुचि नहीं रखतेहैं। हां ऐसे लोग प्रारंभिक तौर पर अपने अपडेट्स में घटनाओं, शोध और राजनीतिक विचार पोस्ट करते हैं।

3.आत्ममुग्ध व्यक्तित्व - ये ऐसे लोग हैं जो खुद को बेहद प्यार करते हैं। ये अक्सर अपने स्टेटस में अपने डेली रुटीन, डाइट और एक्सरसाइज के बारे में जानकारी देते हैं। वे अक्सर ऐसी जगहों और घटनाओं के बारे में जानकारी देतेहैं, जिनसे उनका व्यक्तिगत महत्व सिद्ध हो।

4.अल्प आत्मविश्वासी .- यदि आप या आपका कोई दोस्त लगातार रोमांटिक पार्टनर के बारे में स्टेटस अपडेट कर रहा है तो समझ लीजिए कि आत्मविश्वास की कमी है।

5.जिम्मेदार प्राणी - शोधकर्ताओं ने बताया कि जो लोग अपने परिवार और दोस्तों के बारे में ज्यादा पोस्ट करते हैं, वे मूलत: जिम्मेदार किस्म के लोग होते हैं। कुल मिलाकर इस शोध का निष्कर्ष ये रहा है कि फेसबुक पर जो लोग अपने रिश्तों से संबंधित जानकारी पोस्ट करते हैं, वे मूलत: असुरक्षित मानसिकता के लोग हुआ करते हैं। वे ऐसा समझते हैं कि ऐसा करके वे अपने रिश्तों पर दावा कर रहे हैं। अब आप अपने दोस्तों की और खुद अपनी स्टेटस अपडेट्स से उनके और खुद अपने व्यक्तित्व को जान सकते हैं।

फलसफा स्वस्थ जिंदगी का

सुभाष कुमार
सहा. प्रबंधक (मा.सं.)

जिंदगी में बेमतलब की बातों पर चिंता कर आप अपनी ही लाइफ को बर्बाद करते हैं।

इंसानी फितरत ही कहेंगे कि हर छोटी-बड़ी बातों पर बेवजह परेशान होते हैं। इन बातों की हमारी जिंदगी में या तो कोई जगह नहीं होती है या होती भी है तो बहुत कम। शायद इन फिजूल की बातों के ऊपर ही ध्यान देने के कारण अधिकतर लोग तनाव या परेशानी में रहते भी हैं। बेकार की बातों पर ध्यान देकर अपनी जिंदगी खराब करने से अच्छा है जिंदगी को खुलकर और अच्छे तरीके से जीया जाए। क्योंकि बहुत ज्यादा सोचने से जिंदगी को हम और भी ज्यादा 'कॉम्प्लीकेटेड' बना देते हैं।

लोग क्या सोचते हैं– हममें से अधिकतर लोग यही सोचकर पूरी जिंदगी परेशान रहते हैं कि सामने वाला हमारे बारे में क्या सोचता है। समाज की एक फितरत होती है कि वो कभी किसी को नहीं छोड़ता है। चाहे आप कितना अच्छा काम क्यों न करें, कोई न कोई बात तो जरुर बनेगी। इसलिए लोग क्या बोलते हैं उसको सोच-सोच कर अपनी जिंदगी बिल्कुल भी तबाह न करें।

न करें इन बातों की चिंता – आपकी जिंदगी में बहुत से लोग ऐसे होंगे जो बात बेबात ड्रामा करते ही रहेंगे अगर आप इन लोगों के बारे में सोचेंगे या चिंता करेंगे तो आप खुद को परेशान करने के अ लावा कुछ नहीं करेंगे। ऐसे लोगों पर अपना वक्त बिल्कुल भी बर्बाद न करें।

दूसरों की आलीशान लाइफ – आप अगर दूसरों की शान-शौकत से खुद की लाइफ स्टाइल की तुलना करते है तो यह बिल्कुल गलत है। अपनी जिंदगी सबसे अच्छी होती है चाहे वह सादगीपूर्ण ही हो। जीवन में चकाचौंध अहमियत नहीं रखती बल्कि आपके अपनों के साथ बिताए गए खुशगवार पल ही आपको सच्ची खुशी दे सकते हैं।

यार कितना काम है – ऐसा तो है नहीं कि आप ही एकलौते है जो काम करते है। आजकल हर दूसरा इंसान नौकरीपेशा है। ऐसे में हर किसी को अपनी नौकरी में कोई न कोई परेशानी तो होती ही रहती है। इसका मतलब यह तो नहीं कि हर छोटी बात पर आप परेशान होने लगें।

पैसा तो बचता ही नहीं – आज की हमारी लाइफ स्टाइल 'मनी बेस्ड' है ऐसे में इकोनॉमिकली इंडीपेंड होना और स्ट्रॉन्ग होना जरुरी है पर इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं कि सोते-जागते आप पैसों के बारे में सोचें और उसे लेकर बेवजह परेशान हों। एक बात हमेशा याद रखें कि पैसा हाथ का मैल होता है।

गलती हो गई – हममें से अधिकांश लोग हर छोटी सी गलती पर भी बहुत ज्यादा परेशान हो जाते हैं। अगर आप भी ऐसे ही लोगों में अपने को शुमार करते हैं तो एक बात हमेशा याद रखिए कि आप एक इंसान हैं और हर इंसान से उसकी पूरी जिंदगी में कई सारी छोटी-बड़ी गलतियां होती ही रहती हैं। ऐसे में उन गलतियों से सबक लें लेकिन परेशान न हों।

मौत हमारी जिंदगी में एक ऐसी चीज है जो होकर ही रहती है। ये हम सभी शायद बचपन से ही जानते हैं फिर उस बारे में ज्यादा सोचकर क्या होगा ? आप को बहुत से लोग मिलेंगे जिन्हें अगर छोटी सी बीमारी भी हो जाए तो वो उसे मौत पर ले जाकर खत्म करते हैं। सिम्पल सी बात है अगर जिंदगी है तो मौत भी होगी ही। इसलिए जब तक जिएं मौत से बेपरवाह और खुलकर जिंदगी को जीने की कोशिश करें।

भविष्य क्या होगा किसी को नहीं पता और जो बीत गया वो कभी वापस तो आ नहीं सकता है। ऐसे में दोनों के बारे में बेवजह सोचने से आप अपना वक्त ही जाया करते हैं। आपको बहुत से लोग ऐसा करते हुए मिल ही जाएंगे जो अपनी जिंदगी का अधिकतर वक्त यही सोचते हुए निकाल देते हैं कि भविष्य में क्या होगा ? और जो बीत गया वो पल कितना हसीं था। इसलिए इन बातों पर ध्यान न ही दें और न ही इसके बारे में चिंता करें। **(संकलित)**

उपभोक्ताओं के अधिकार

विक्रमसिंह चौधरी
कनिष्ठ पड़तालक (नियंत्रण)

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 के अनुसार कोई व्यक्ति जो अपने उपयोग के लिये सामान अथवा सेवायें खरीदता है, वह उपभोक्ता हैं। क्रेता की अनुमति से ऐसे, सामान सेवाओं का उपयोग करने वाला व्यक्ति भी उपभोक्ता है। मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त उपभोक्ता बना रहता है। अतः हममें से प्रत्येक किसी न किसी रुप में उपभोक्ता है।

उपभोक्ता के रुप में हमें कुछ अधिकार प्राप्त हैं, जैसे-सुरक्षा का अधिकार, सूचना प्राप्त करने का अधिकार, उपभोक्ता शिक्षा का अधिकार, क्षतिपूर्ति प्राप्त करने का अधिकार, शिकायत-निवारण का अधिकार, मूलभूत आवश्यकताएँ, जैसे-भोजन, वस्त्र और आवास प्राप्त करने का अधिकार आदि। संविधान ने एल.पी.जी. गैस उपभोक्ताओं को भी कई अधिकार प्रदान किए है। स्वस्थ परम्परा का निर्वाह करते हुए अनेक गैस एजेंसियों द्वारा प्रतिवर्ष उपभोक्ताओं को प्रशिक्षित एवं जागरुक करने के उद्देश्य से अनेकानेक गतिविधियाँ संचालित की जाती है। गैस उपभोक्ता का अधिकार है कि उसे तौल-मौल के साथ सिलेण्डर प्रदाय हो। शासन द्वारा निर्धारित दर पर गैस क्रमानुसार प्राप्त हो। सिलेण्डर सील पैक हो, खराब सिलेण्डर बदलने की भी व्यवस्था हो। रेग्यूलेटर खराब होने पर निःशुल्क बदलने का अधिकार है, यदि किसी प्रकार की राशि ली जाती है तो उसका बिल लेने का अधिकार है। समय-समय पर सूचना, प्रशिक्षण एवं जानकारी प्राप्त करने का अधिकार। गैस का रखरखाव कैसे करें , कैसे उपयोग करें व कैसे बचाएं आदि सुरक्षात्मक जानकारी का अधिकार है।

फिर भी किसी व्यापारी या संस्था से यदि आपको हानि/क्षति हुई है अथवा खरीदे गये सामान में यदि कोई खराबी है या फिर किराये पर ली गई, उपभोग की गई सेवाओं में कमी पाई है या फिर विक्रेता ने आपसे प्रदर्शित मूल्य से अधिक मूल्य लिया गया है। इसके अलावा यदि किसी कानून का उल्लंघन करते हुए जीवन तथा सुरक्षा के लिये जोखिम पैदा करने वाला सामान जनता को बेचा जा रहा है तो आप शिकायत दर्ज करवा सकते है। शिकायत स्वयं उपभोक्ता या कोई स्वैच्छिक उपभोक्ता संगठन जो समिति पंजीकरण अधिनियम 1860 अथवा कम्पनी अधिनियम 1951 अथवा फिलहाल लागू अन्य विधि के अधीन पंजीकृत हो दर्ज कर सकता है। शिकायत कहां की जाये, यह बात सामान, सेवाओं की लागत अथवा मांगी गई क्षतिपूर्ति पर निर्भर करती है। अगर राशि बीस लाख रुपये से कम है तो जिला फोरम में शिकायत करें। यदि यह राशि बीस लाख से अधिक लेकिन एक करोड़ रुपये से कम है तो राज्य आयोग के समक्ष और यदि एक करोड़ रुपये से अधिक है तो राष्ट्रीय आयोग के समक्ष शिकायत दर्ज करायें । वैबसाईट www. fcamin.nic.in पर सभी पते उपलब्ध है या फिर वकील के माध्यम से जानकारी ली जा सकती है।

शिकायत उपभोक्ता द्वारा अथवा शिकायतकर्ता द्वारा सादे कागज पर की जा सकती है। शिकायत में शिकायतकर्ताओं तथा विपरीत पार्टी के नाम का विवरण तथा पता, शिकायत से संबंधित तथ्य एवं यह सब, कब और कहां हुआ आदि का विवरण, शिकायत में उल्लेखित आरोपों के समर्थन में दस्तावेज, साथ ही प्राधिकृत एजेन्ट के हस्ताक्षर होने चाहिए। इस प्रकार की शिकायत दर्ज कराने के लिये किसी वकील की आवश्यकता नहीं होती, साथ ही इस कार्य पर नाम मात्र का न्यायालयीन शुल्क लगता है।

न्यायालय द्वारा उपभोक्ताओं को प्रदाय सामान से खराबियाँ हटाना सामान को बदलना, चुकाये गये मूल्य को वापिस देने के अलावा हानि अथवा चोट के लिये क्षतिपूर्ति। सेवाओं में त्रुटियाँ या कमियां हटाने के साथ-साथ पार्टियों को पर्याप्त न्यायालय वाद-व्यय प्रदान कर राहत दी जाती है।सरकार ने उपभोक्ताओं को लूट-खसोट से बचाने के लिये सख्त कानून बनाए है। जागरुक उपभोक्ता इनका लाभ ले सकता है वरना धोखाधड़ी से बच नहीं पायेगा। उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा के लिये कई स्वैच्छिक संगठन है। इनमें से एक संगठन अखिल भारतीय उपभोक्ता कांग्रेस है जो सदा उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा के लिये है। ऐसे किसी भी संगठन के पदाधिकारियों से सम्पर्क भी कर सकते है। हमारा संगठन अखिल भारतीय उपभोक्ता कांग्रेस एक गैर राजनीतिक संगठन होकर भारत-सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त संगठन है।

(लेखक अखिल भारतीय उपभोक्ता कांग्रेस देवास के जिलाध्यक्ष भी है।)

प्रियजनों के लिये निकाले समय

श्रीमती नालंदा बागड़े
कनिष्ठ पड़तालक (सायमल्टन)

अगर हमसे आज यह पूछा जाए कि हमारे पास सुख सुविधाओं के साधन मौजूद है फिर किस बात की कमी है तो जवाब होगा हमारे पास वक्त की कमी है। इस इंटरनेट युग में भले ही संचार माध्यमों ने हमारे दोस्तों और रिश्तेदारों के बीच की दूरी को कम कर दिया है लेकिन उनके सामने हमारी मौजूदगी मुश्किल हो गई है क्यों कि किसी के पास भी अब दूसरों के लिए वक्त नहीं है। आज हमारे और रिश्तेदारों के बीच इतने फासले पैदा हो गए है कि उनके लिए वक्त निकालना सचमुच मुश्किल होता है।

अगर देखा जाए तो पैसे और प्रसिद्धि का हमारे लिए सचमुच कोई मतलब नहीं है। अगर हमारे रिश्तेदार हमारे आसपास न हो। क्यों कि हम कितने भी भौतिक क्यों न हो जाएँ लेकिन एक सीमा के बाद हमें अपने अपने जीवन में एकरसता महसूस होने लगती है और अपने भीतर हमें एक खालीपन महसूस होता है। हममें से हर कोई चाहता है कि हमारी कोई परवाह करें। हम किसी पर अपना प्यार न्यौछावर करें। हमारी सभी फिक्र करें। हम उनके साथ थोड़ा हस बोलकर अपना वक्त बिताकर जीवन की एकरसता को तोड़ें। काम हम पर इतना हावी न हो जाए कि रिश्तें और दोस्तों के लिए हमें वक्त ही न मिलें। तो क्यों न काम पर लगाएं विराम और उनके लिए समय निकाले।

आज समय बदल गया है। पहले जहाँ हम छुट्टियों में समय निकालकर दोस्तों, रिश्तेदारों के यहाँ जाकर अपनी छुट्टियां बिताया करते थे। अपने जीवन की तमाम व्यस्तताओं के बीच वक्त निकालना मुश्किल ही है। लेकिन जब महसूस हो कि आप सचमुच अपने दोस्तों और रिश्तेदारों को भूला रहे है तो उन्हें कम से कम एक फोन या एसएमएस ही कर दीजिए। इस बात में कोई दो राय नहीं है घूमना-फिरना भी जरुरी है लेकिन अपनों से मिलकर एक-दूसरे की बातें सुनकर एकदम तरोजाता हो जाते हैं।

किसी से मिलकर उनके साथ अपने सुख-दुःख साझा करने के साप्ताहिक मिलन के प्रयास टलते-टलते मासिक वार्षिक और दशकों के अंतराल तक पहुंच जाते है। महानगरों में ही नहीं छोटे शहरों में तेजी से पांव पसारते अपार्टमेंट कल्चर का ही असर है कि हम इंटरनेट के जरिये भले ही दुनिया भर के लोगों से बात करते हो लेकिन हमें यह पता नहीं होता है कि हमारे पड़ोस में कौन रहता है। यह बदलती जीवन शैली का ही असर है कि हम आज जो है उसको और उससे भी और ज्यादा की चाहत हमें है। जीवन में एकरसता और घुटन बढ़ती है। अत्यधिक काम, अत्यधिक तनाव के कारण हम अपने अपनों से दूर हो जाते है और खुद को कुंठित महसूस करते हैं। इससे हम डिप्रेशन व आक्रामकता के शिकार हो जाते है। सवाल पैदा होता है जब वक्त है ही नहीं तो कैसे निकाला जाएं ? सच तो यह है कि खुद को मैनेज करना आज के दौर में बेहद मुश्किल है। लेकिन इस बात का कोई फायदा नहीं है कि हम बाद में इस बात को लेकर पछताएँ कि हमने अपनी जिंदगी के सुनहरे साल सिर्फ पैसा कमाने की दौड़ में ही बिता दिए। बच्चें कब बड़े हो गए हमें पता ही नहीं चल पाता। कई बच्चे माता-पिता के प्रेम के अभाव में ही बड़े हो जाते हैं। कुछ संभल जाते हैं तो कुछ बिगड़ जाते है। माता-पिता अपने पैसे कमाने की जिद की वजह से अपने बच्चों को वक्त नहीं दे पाते हैं।

इसलिए ऑफिस और घर के बीच अपनी प्राथमिकताएं और लक्ष्य तय करें और उन्हीं लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए जरुरी है समय का सही निर्धारण। अपनी ऑफिस की व्यस्त दिनचर्या से अपने लिए भी थोड़ा समय निकाले। महीने के अंत में अपने काम का मूल्याकंन करें। जीवन को पूरी तरह फिक्स्ड न करें। आकस्मिक रुप से आने वाली जिम्मेदारियों के लिए भी समय निकाले। दूसरों के बीच रहने से, अपने सामाजिक सरोकार विकसित करने से परिवार के साथ भी समय बिताएं। अतीत की असफलताएं और भविष्य की चिंताओं से दूर वर्तमान में जीने कीआदत डाले।

चीफ़ की दावत

साहित्यिक विरासत (कहानी)

भीष्म साहनी

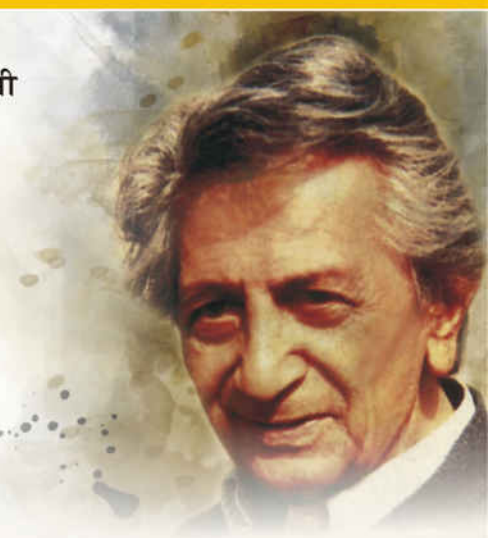

आज मिस्टर शामनाथ के घर चीफ की दावत थी।

शामनाथ और उनकी धर्मपत्नी को पसीना पोंछने की फुर्सत न थी । पत्नी ड्रेसिंग गाउन पहने, उलझे हुए बालों का जूड़ा बनाए मुँह पर फैली हुई सुर्खी और पाउडर मले और मिस्टर शामनाथ सिगरेट पर सिगरेट फूँकते हुए चीजों की फेहरिस्त हाथ में थामे, एक दूसरे कमरे में आ-जा रहे थे।

आखिर पाँच बजते-बजते मुकम्मल होने लगी । कुर्सियाँ, मेज, तिपाइयाँ, नैपकिन, फूल, सब बरामदे में पहुँच गए। ड्रिंक का इंतजाम बैठक में कर दिया गया। अब घर का फालतू सामान अलमारियों के पीछे और पलंगों के नीचे छिपाया जाने लगा । तभी शामनाथ के सामने सहसा एक अड़चन खड़ी हो गई, माँ का क्या होगा ?

इस बात की ओर न उनका और न उनकी कुशल गृहिणी का ध्यान गया था। मिस्टर शामनाथ श्रीमती की ओर घूम कर अंग्रेजी में बोले- माँ का क्या होगा ?

श्रीमती काम करते-करते ठहर गई, और थोड़ी देर तक सोचने के बाद बोलीं - 'इन्हें पिछवाड़े इनकी सहेली के घर भेज दो, रात-भर बेशक वहीं रहें। कल आ जाएँ।'

शामनाथ सिगरेट मुँह में रखे, सिकुड़ी आँखों से श्रीमती के चेहरे की ओर देखते हुए पल-भर सोचते रहे, फिर सिर हिला कर बोले -'नहीं मैं नहीं चाहता कि उस बुढ़िया का आना-जाना यहाँ फिर से शुरु हो। पहले ही बड़ी मुश्किल से बंद किया था। माँ से कहे कि जल्दी खाना खा के शाम को ही अपनी कोठरी में चली जाएँ। मेहमान कहीं आठ बजे आएँगे इससे पहले ही अपने काम से निबट लें।'

सुझाव ठीक था। दोनों को पसंद आया। मगर फिर सहसा श्रीमती बोल उठीं - 'जो वह सो गई और नींद में खर्राटे ले ने लगीं, तो ? साथ ही तो बरामदा है, जहाँ लोग खाना खाएँगे।'

'तो इन्हें कह देंगे कि अंदर से दरवाजा बंद कर लें। मैं बाहर से ताला लगा दूँगा। या माँ को कह देता हूँ कि अंदर जा कर सोएँ नहीं, बैठी रहें और क्या ?'

'और जो सो गई तो ? डिनर का क्या मालूम कब तक चले। ग्यारह-ग्यारह बजे तक तो तुम ड्रिंक ही करते रहते हो।"

शामनाथ कुछ खीज उठे, हाथ झटकते हुए बोले - 'अच्छी भली यह भाई के पास जा रही थीं । तुमने यूँ ही खुद अच्छा बनने के लिए बीच में टाँग अड़ा दी''वाह ! तुम माँ और बेटे की बातों में मैं क्यों बुरी बनूँ ? तुम जानो और वह जानें।"

मिस्टर शामनाथ चुप रहे। यह मौका बहस का न था, समस्या का हल ढूँढने का था। उन्होंने घूम कर माँ की कोठरी की ओर देखा। कोठरी का दरवाजा बरामदे में खुलता था। बरामदे की ओर देखते हुए झट से बोले - मैंने सोच लिया है, - और उन्हीं कदमों माँ की कोठरी के बाहर जा खड़े हुए। माँ दीवार के साथ एक चौकी पर बैठी, दुपट्टे में मुँह-सिर लपेटे, माला जप रही थीं। सुबह से तैयारी होती देखते हुए माँ का भी दिल धड़क रहा था। बेटे के दफ्तर का बड़ा साहब घर पर आ रहा है, सारा काम सुभीते चल जाय।

माँ, आज तुम खाना जल्दी खा लेना। मेहमान लोग सात बजे आ जाएंगे।

माँ ने धीरे से मुँह पर से दुपट्टा हटाया और बेटे को देखते हुए कहा, आज मुझे खाना नहीं खाना है, बेटा तुम तो जानते हो, मांस-मछली बने, तो मैं कुछ नहीं खाती।

जैसे भी हो, अपने काम से जल्दी निपट लेना।

अच्छा बेटा।

और माँ, हम लोग पहले बैठक में बैठेंगे । उतनी देर तुम यहाँ बरामदे में बैठना। फिर जब हम यहाँ आ जाएँ, तो तुम गुसलखाने के रास्ते बैठक में चली जाना।

माँ अवाक बेटे का चेहरा देखने लगीं। फिर धीरे से बोली - अच्छा बेटा।

और माँ आज जल्दी सो नहीं जाना। तुम्हारे खर्राटों की आवाज दूर तक जाती है।

माँ लज्जित-सी आवाज में बोली - क्या करुँ, बेटा, मेरे बस की

बात नहीं है। जब से बीमारी से उठी हूँ, नाक से साँस नहीं ले सकती।

मिस्टर शामनाथ ने इंतजाम तो कर दिया, फिर भी उनकी उधेड़-बुन खत्म नहीं हुई। जो चीफ अचानक उधर आ निकला ? आठ-दस मेहमान होंगे, देसी अफसर, उनकी स्त्रियाँ होंगी, कोई भी गुसलखाने की तरफ जा सकता है। क्षोभ और क्रोध में वह झुंझलाने लगे। एक कुर्सी को उठा कर बरामदे में कोठरी के बाहर रखते हुए बोले - आओ माँ, इस पर जरा बैठो तो।

माँ माला सँभालती, पल्ला ठीक करती उठीं, और धीरे से कुर्सी पर आ कर बैठ गई।

यूँ नहीं, माँ टाँगे ऊपर चढ़ा कर नहीं बैठते। यह खाट नहीं हैं।

माँ ने टाँगे नीचे उतार ली।

और खुदा के वास्ते नंगे पाँव नहीं घूमना। न ही वह खड़ाऊँ पहन कर सामने आना। किसी दिन तुम्हारी यह खड़ाऊ उठा कर मैं बाहर फेंक दूँगा।

माँ चुप रहीं।

कपड़े कौ न से पहनोगी, माँ ?

जो है, वही पहनूँगी, बेटा ! जो कहो, पहन लूँ।

मिस्टर शामनाथ सिगरेट मुँह में रखे, फिर अधखुली आँखों सेमाँ की ओर देखने लगे, और माँ के कपड़ों की सोचने लगे। शामनाथ हर बात में तरतीब चाहते थे। घर का सब संचालन उनके अपने हाथ में था। खूटियाँ कमरों में कहाँ लगाई जाएँ, बिस्तर कहाँ पर बिछे, किस रंग के पर्दे लगाएँ जाएँ, श्रीमती कौन-सी साड़ी पहनें, मेज किस साइज की हो .... शामनाथ को चिंता थी अगर चीफ का साक्षात माँ से हो गया, तो कहीं लज्जित ना होना पड़े। माँ को सिर से पाँव तक देखते हुए बोले - तुम सफेद कमीज और सलवार पहन लो, माँ। पहन के आओ तो, जरा देखूँ।

माँ धीरे से उठीं और अपनी कोठरी में कपड़े प हनने चली गई।

यह माँ का झमेला ही रहेगा, उन्होंने फिर अंग्रेजी में अपनी स्त्री से कहा - कोई ढंग की बात हो, तो भी कोई कहे। अगर कहीं कोई उल्टी-सीधी बात हो गई, चीफ को बुरा लगा, तो सारा मजा जाता रहेगा।

माँ सफेद कमीज और सफेद सलवार पहन कर बाहर निकलीं। छोटा-सा कद, सफेद कपड़ों में लिपटा, छोटा सा सूखा हुआ शरीर, धुँधली आँखें, केवल सिर के आधे झड़े हुए बाल पल्ले की ओट में छिप पाए थे। पहले से कुछ ही कम कुरुप नजर आ रही थीं।

चलो, ठीक है। कोई चूड़ियाँ-वूड़ियाँ हों, तो वह भी पहन लो। कोई हर्ज नहीं।

चूड़ियाँ कहा से लाऊँ, बेटा ? तुम तो जानते हो, सब जेवर तुम्हारी पढ़ाई में बिक गए।

यह वाक्य शामनाथ को तीर की तरह लगा। तिनक कर बोले - यह कौन-सा राग छेड़ दिया, माँ ! सीधा कह दो, नहीं हैं जेवर, बस ! इससे पढ़ाई-वढ़ाई का क्या तअल्लुक है ! जो जेवर बिका, तो कुछ ब न कर ही आया हूँ, निरा लँडूरा तो नहीं लौट आया। जितना दिया था, उससे दुगना ले लेना।

मेरी जीभ जल जाय, बेटा, तुमसे जेवर लूँगी ? मेरे मुँह से यूँ ही निकल गया। जो होते, तो लाख बार पहनती।साढ़े पाँच बज चुके थे। अभी मिस्टर शामनाथ को खुद भी नहा-धो कर तैयार होना था। श्रीमती कब की अपने कमरे में जा चुकी थी। शामनाथ जाते हुए एक बार फिर माँ को हिदायत करते गए - माँ, रोज की तरह गुमसुन बन के नहीं बैठी रहना। अगर साहब इधर आ निकलें और कोई बात पूछें, तो ठीक तरह से बात का जवाब देना।

मैं न पढ़ी, न लिखी, बेटा, मैं क्या बात करुँगी। तुम कह देना, माँ अनपढ़ है, कुछ जानती-समझती नहीं। वह नहीं पूछेगा।

सात बजते-बजते माँ का दिल धक-धक करने लगा।

अगर चीफ सामने आ गया और उसने कुछ पूछा, तो वह क्या जवाब देगी। अंग्रेजों को तो दूर से ही देख कर घबरा उठती थीं, यह तो अमरीकी है। न मालूम क्या पूछे। मैं क्या कहूँगी। माँ का जी चाहा कि चुपचाप पिछवाड़े विधवा सहेली के घर चली जाएँ। मगर बेटे के हुक्म को कैसे टाल सकती थीं ! चुपचाप कुर्सी पर से टाँगें लटकाए वहीं बैठी रही।

एक कामयाब पार्टी वह है, जिसमें ड्रिंक कामयाबी से चल जाएँ। शामनाथ की पार्टी सफलता के शिखर चूमने लगी।

वार्तालाप उसी रौ में बह रहा था, जिस रौ में गिलास भरे जा रहे थे। कहीं कोई रुकावट न थी, कोई अड़चन न थी। साहब को व्हिस्की पसंद आई थी। मेमसाहब को पर्दे पसंद आए थे, सोफ— कवर का डिजाइन पसंद आया था, कमरे की सजावट पसंद आई थी। इससे बढ़कर क्या चाहिए। साहब तो ड्रिंक के दूसरे दौर में ही चुटकुले और कहानियाँ कहने लग गए थे। दफ्तर में जितना रौब रखते थे, यहाँ पर

उतने ही दोस्त-परवर हो रहे थे और उनकी स्त्री, काला गाउन पहने, गले में सफेद मोतियों का हार, सेंट और पाउडर की महक से ओत-प्रोत, कमरे में बैठी सभी देसी स्त्रियों की आराधना का केद्र बनी हुई थीं। बात-बात पर हँसती, बात- बात पर सिर हिलातीं और शामनाथ की स्त्री से तो ऐसे बातें कर रही थीं, जैसे उनकी पुरानी सहेली हों।

और इसी रो में पीते-पिलाते साढ़े दस बज गए। वक्त गुजरते पता ही न चला।

आखिर सब लोग अपने-अपने गिलासों में से आखिरी घूँट पी कर खाना खाने के लिए उठे और बैठक से बाहर निकले। आगे-आगे शामनाथ रास्ता दिखाते हुए, पीछे चीफ और दूसरे मेहमान।

बरामदे में पहुँचते ही शामनाथ सहसा ठिठक गए। जो दृश्य उन्होंने देखा, उससे उनकी टाँगें लड़खड़ा गई, और क्षण-भर में सारा नशा हिरन होने लगा। बरामदे में ऐन कोठरी के बाहर माँ अपनी कुर्सी पर ज्यों-की-त्यों बैठी थीं। मगर दोनों पाँव कुर्सी की सीट पर रखे हुए, और सिर दाएँ से बाएँ और बाएँ से दाएँ झूल रहा था और मुँह में से लगातार गहरे खर्राटों की आवाजें आ रही थीं। जब सिर कुछ देर के लिए टेढ़ा होकर एक तरफ को थम जाता, तो खर्राटें और भी गहरे हो उठते। और फिर जब झटके से नींद टूटती, तो सिर फिर दाएँ से बाएँ झूलने लगता। पल्ला सिर पर से खिसक आया था, और मौं के झरे हुए बाल, आधे गंजे सिर पर अस्त-व्यस्त बिखर रहे थे।

देखते ही शामनाथ क्रुद्ध हो उठे। जी चाहा कि माँ को धक्का देकर उठा दें, और उन्हें कोठरी में धकेल दें, मगर ऐसा करना संभव न था, चीफ और बाकी मेहमान पास खड़े थे।

माँ को देखते ही देसी अफसरों की कुछ स्त्रियाँ हँस दीं कि इतने में चीफ ने धीरे से कहा - पुअर डियर!

माँ हड़बड़ा के उठ बैठीं। सामने खड़े इतने लोगों को देखकर ऐसी घबराई कि कुछ कहते न बना। झट से पल्ला सिर पर रखती हुई खड़ी हो गई और जमीन को देखने नगीं। उनके पॉव लड़खड़ाने लगे और हाथें की उँगलियाँ थर-थर काँपने लगीं।

माँ, तुम जाके सो जाओ, तुम क्यों इतनी देर तक जाग रही थीं? और खिसियाई हुई नजरों से शामनाथ चीफ के मुँह की ओर देखने लगे।

चीफ के चेहरे पर मुस्कराहट थी। वह वहीं खड़े-खड़े बोले, नमस्ते! माँ ने झिझकते हुए, अपने में सिमटते हुए दोनों हाथ जोड़े, मगर एक हाथ दुपट्टे के अंदर माला को पकड़े हुए था, दूसरा बाहर, ठीक तरह से नमस्ते भी न कर पाई। शामनाथ इस पर भी खिन्न हो उठे।

इतने में चीफ ने अपना दायाँ हाथ मिलाने के लिए माँ के आगे किया। माँ और भी घबरा उठीं।

माँ, हाथ मिलाओ।

पर हाथ कैसे मिलाती? दाएँ हाथ में तो माला थी।

घबराहट में माँ ने बायों हाथ ही साहब के दाएँ हाथ में रख दिया। शामनाथ दिल ही दिल में जल उठे। देसी अफसरों की स्त्रियाँ खिलखिला कर हँस पड़ी।

यूँ नहीं, माँ! तुम तो जानती हो, दायाँ हाथ मिलाया जाता है। दायाँ हाथ मिलाओ।

मगर तब तक चीफ माँ का बायाँ हाथ ही बार-बार हिला कर कह रहे थे - हाउ डू यू डू?

कहो माँ, मैं ठीक हूँ, खैरियत से हूँ।

माँ कुछ बड़बड़ाई।

माँ कहती हैं, मैं ठीक हूँ। कहो माँ, हाउ डू यू डू।

माँ धीरे से सकुचाते हुए बोलीं - हौ डू डू...

एक बार फिर कहकहा उठा।

वातावरण हल्का होने लगा साहब ने स्थिति सँभाल ली थी। लोग हँसने-चहकने लगे थे। शामनाथ के मन का क्षोम भी कुछ- कुछ कम होने लगा था।

साहब अपने हाथ में माँ का हाथ अब भी पकड़े हुए थे, और माँ सिकुड़ी जा रही थीं। साहब के मुँह से शराब की बू आ रही थी।

शामनाथ अंग्रेजी में बोले - मेरी माँ गाँव की रहने वाली है। उमर भी गाँव में ही रही। इसलिए आपसे लजाती है।

साहब इस पर खुश नजर आए। बोले - सच? मुझे गाँव के लोग बहुत पसंद हैं, तब तो तुम्हारी माँ गाँव के गीत और नाच भी जानती होगी? चीफ खुशी के सिर हिलाते हुए माँ को टकटकी बाँधे देखने लगे।

माँ साहब कहते हैं, कोई गाना सुनाओ। कोई पुराना गीत तुम्हें तो कितने ही याद होंगे।

माँ धीरे से बोली - मैं क्या गाऊँगी बेटा। मैंने कब गाया है?

वाह, माँ! मेहमान का कहा भी कोई टालता है?

साहब ने इतना रीझ से कहा है, नहीं गाओगी तो साहब बुरा मानेंगे।

मैं क्या गाऊँ, बेटा। मुझे क्या आता है ?

वाह ! कोई बढ़िया टप्पे सुना दो। दो पत्तर अनारॉ दे ....

देसी अफसर और उनकी स्त्रियों ने इस सुझाव पर तालियाँ पीटी। माँ कभी दीन दृष्टि से बेटे के चे हरे को देखती, कभी पास खड़ी बहू के चेहरे को।

इतने में बेटे ने गंभीर आदेश-भरे लिहाज में कहा - माँ ! इसके बाद हाँ या ना सवाल ही न उठता था। माँ बैठ गई और क्षीण, दुर्बल आवाज में एक पुराना विवाह का गीत गाने लगीं-हरिया नी माए, हरिया नी भैणे हरिया ते भागी भरिया है !

देसी स्त्रियाँ खिलखिला के हँस उठीं। तीन पंक्तियाँ गा के माँ चुप हो गई।

बरामदा तालियों से गूँज उठा। साहब तालियाँ पीटना बंद ही न करते थे। शामनाथ की खीज प्रसन्नता और गर्व में बदल उठी थी। माँ ने पार्टी में नया रंग भर दिया था।

तालियाँ थमने पर साहब बोले - पंजाब के गाँवों की दस्तकारी क्या है ?

शामनाथ खुशी में झूम रहे थे। बोले - ओ बहुत कुछ - साहब! मैं आपको एक सेट उन चीजों का भेंट करुँगा। आप उन्हें देखकर खुश होंगे।

मगर साहब ने सिर हिलाकर अंग्रेजी में फिर पूछा - नहीं, मैं दुकानों की चीज नहीं माँगता। पंजाबियों के घरों में क्या बनता है, औरतें खुद क्या बनाती हैं ?

शामनाथ कुछ सोचते हुए बोले - लड़कियाँ गुड़ियाँ बनाती है और फुलकारियाँ बनाती हैं।

फुलकारी क्या ?

शामनाथ फुलकारी का मतलब समझाने की असफल चेष्टा करने के बाद माँ को बोले - क्यों , माँ कोई पुरानी फुलकारी घर में हैं ?

माँ चुपचाप अंदर गई और अपनी पुरानी फुलकारी उठा लाई।

साहब बड़ी रुचि से फुलकारी देखने लगे । पुरानी फुलकारी थी, जगह-जगह से उसके तागे टूट रहे थे और कपड़ा फटने लगा थ। साहब की रुचि को देखकर शामनाथ बोले - यह फटी हुई है, साहब मैं आपको नई बनवा दूँगा। माँ बना देगी। क्यों, माँ साहब को फुलकारी बहुत पसंद है, इन्हें एसी ही एक फुलकारी बना दोगी न ?

माँ चुप रही। फिर डरते-डरते धीरे से बोली - अब मेरी नजर कहाँ है, बेटा ! बूढ़ी आँखें क्या देखेंगी ?

मगर माँ का वाक्य बीच में ही तोड़ते हुए शामनाथ साहब को बोले - वह जरुर बना देंगी। आप देख कर खुश होंगे।

साहब ने सिर हिलाया, धन्यवाद किया और हल्के-हल्के झूमते हुए खाने की मेज की ओर बढ़ गए। बाकी मेहमान भी उनके पीछे-पीछे हो लिए।

जब मेहमान बैठ गए और माँ पर से सबकी आँखे हट गई, तो माँ धीरे से कुर्सी पर से उठीं, और सबसे नजरें बचाती हुई अपनी कोठरी में चली गई।

मगर कोठरी में बैठने की देर थी कि आँखों में छल-छल आँसू बहने लगे। वह दुपट्टे से बार-बार उन्हें पोंछती, पर वह बार- बार उमड़ आते, जैसे बरसों का बाँध तोड़ कर उमड़ आए हों। माँ ने बहुतेरा दिल को समझाया, हाथ जोड़े, भगवान का नाम लिया, बेटे के चिरायु होने की प्रार्थना की, बार-बार आँखें बंद की, मगर आँसू बरसात के पानी की तरह जैसे थमने में ही न आते थे।

आधी रात का वक्त होगा। मेहमान खाना खा कर एक-एक करके जा चुके थे। माँ दीवार से सट कर बैठी आँखें फाड़ेदीवार को देखे जा रही थीं। घर के वातावरण में तनाव ढीला पड़ चुका था। मुहल्ले की निस्तब्धता शामनाथ के घर भी छा चुकी थी, केवल रसोई में प्लेटों के खनकने की आवाज आ रही थी। तभी सहसा माँ की कोठरी का दरवाजा जोर से खटकने लगा।

माँ दरवाजा खोलो।

माँ का दिल बैठ गया। हड़बड़ा कर उठ बैठीं। क्या मुझसे फिर कोई भूल हो गई ? कितनी देर से अपने आपको कोस रही थीं कि क्यों उन्हें नींद आ गई, क्याँ वह ऊँघने लगीं। क्या बेटे ने अभी तक क्षमा नहीं किया ? माँ उठीं और काँपते हाथें से दरवाजा खोल दिया।

दरवाजा खुलते ही शामनाथ झूमते हुए आगे बढ़ आए और माँ को आलिंगन में भर लिया।

ओ अम्मी ! तुमने तो आज रंग ला दिया ! साहब तुमसे इतना खुश हुआ कि क्या कहूँ। ओ अम्मी ! ओ अम्मी !

माँ की छोटी-सी काया सिमट कर बेटे के आलिंगन में छिप गई। माँ की आँखों में फिर आँसू आ गए। उन्हें पोंछती हुई धीरे से बोली - बेटा, तुम मुझे हरिद्वार भेज दो। मैं कब से कह रही हूँ।

शामनाथ का झूमना सहसा बंद हो गया और उनकी परेशानी पर फिर तनाव के बल पड़ने लगे। उनकी बाँहों माँ के शरीर पर से हट आई। क्या कहा, माँ ? यह कौन-सा राग तुमने फिर छेड़ दिया ?

शामनाथ का क्रोध बढ़ने लगा था, बोलते गए - तुम मुझे बदनाम करना चाहती हो, ताकि दुनिया कहे कि बेटा माँ को अपने पास नहीं रख सकता।

नहीं बेटा, अब तुम अपनी बहू के साथ जैसा मन चाहे रहो। मैंने अपना खा-पहन लिया। अब यहाँ क्या करुँगी। जो थोड़े दिन जिंदगानी केबाकी हैं , भगवान का नाम लूँगी। तुम मुझे हरिद्वार भेज दो!

तुम चली जाओगी, तो फुलकारी कौन बनाएगा ? साहब से तुम्हारे सामने ही फुलकारी देने का इकरार किया है।

मेरी आँखें अब नहीं हैं, बेटा जो फुलवारी बना सकूँ । तुम कहीं ओर से बनवा लो। बनी-बनाई ले लो।

माँ, तुम मुझे धोखा देके यूँ चली जाओगी ? मेरा बनता काम बिगाड़ोगी ? जानती नहीं, साहब खुश होगा, तो मुझे तरक्की मिलेगी।

माँ चुप हो गई। फिर बेटे के मुँह की ओर देखती हुई बोली - क्या तेरी तरक्की होगी ? क्या साहब तेरी तरक्की कर देगा ? क्या उसने कुछ कहा है ?

कहा नहीं , मगर देखती नहीं, कितना खुश गया है। कहता था, जब तेरी माँ फुलकारी बनाना शुरु करेंगी, तो मैं देखने आऊँ गा कि कैसे बनाती हैं। जो साहब खुश हो गया, तो मुझे इससे बड़ी नौकरी भी मिल सकती है, मैं बड़ा अफसर बन सकता हूँ।

माँ के चेहरे का रंग बदलने लगा, धीरे-धीरे उनका झुर्रियों -भरा मुँह खिलने लगा, आँखों में हल्की-हल्की चमक आने लगी।

तो तेरी तरक्की होगी बेटा ?

तरक्की यूँ ही हो जाएगी ? साहब को खुश रखूँगा, तो कुछ करेगा, वरना उसकी खिदमत करने वाले और थोड़े हैं ?

तो मैं बना दूँगी, बेटा, जैसे बन पड़ेगा , बना दूँगी।

और माँ दिल ही दिल में फिर बेटे के उज्ज्वल भविष्य की कामनाएँ करने लगीं और मिस्टर शामनाथ, अब सो जाओ, माँ कहते हुए, तनिक लड़खड़ाते हुए अपने कमरे की ओर घूमगए।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर महापरिनिर्वाण दिवस के आयोजन की झलकियां

(06 दिसम्बर 2018, स्थान : बी.एन.पी. परिसर, डॉ अम्बेडकर उद्यान)

बायोकैमिक चिकित्सा क्या है एवं इसके सिद्धांत क्या है ।

डॉ. कैलाश सिंह नागर
तक. (कर्मशाला)

डॉ. सैम्युल हैनिमैन द्वारा होम्योपैथी के सिद्धांतो की प्रतिष्ठा हो जाने के पश्चात चिकित्सा के क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण योगदान डॉ. डब्ल्यु. एच. शुस्लर का रहा है। डॉ. डब्ल्यु. एच. शुस्कर का जन्म जर्मनी के ओल्डनबर्ग में 21 अगस्त सन 1821 को हुआ था।

बायोकैमिक चिकित्सा क्या है ?

बायोकैमिस्ट्री चिकित्सा से पहले बायोकैमिक शब्द को जान लेना आवश्यक है। बायोकैमिस्ट्री (Biochemistry) शब्द बायोस (Bios) तथा कैमिस्ट्री (Chemistry) शब्दों से मिलकर बना है। जिसका अर्थ है-जीवन व रसायन अत. बायोकैमिस्ट्री का अर्थ हुआ जीवन रसायन। हमारा शरीर असंख्य कोशिकाओं (Cells) से मिलकर बना है तथा शरीर के अंदर(Organic) कार्बनिक व (Inorganic) अकार्बनिक पदार्थों के मिलने से जो रासायनिक क्रियाएँ होती है उनके फलस्वरुप शरीर का विकास एवं क्षय बराबर होता रहता है जिनका सीधा असर कोशिकाओं पर होता है। शारीरिक अंगो के सही संचालन एवं पोषण आदि के लिए विभिन्न प्रकार के (Inorganic) अकार्बनिक पदार्थो की आवश्यकता होती है। वैसे तो अकार्बनिक पदार्थ ही तन्तु (Tissues) आदि तैयार करते है और शरीर की प्रत्येक कोशिकाओं में उपयुक्त परिणाम में रहकर ही ये शरीर एवं जीवनी शक्ति को सुनियंत्रित रखते है। यदि शरीर में अकार्बनिक पदार्थ की कमी हो जाये तो कार्बनिक पदार्थ भी काम करने की शक्ति खो बैठते है और इसके फलस्वरुप शरीर रोग ग्रस्त हो जाता है। ऐसे हालात में यदि बायोकैमिक चिकित्सा का उपयोग किया जाये तो शरीर में हुई इस कमी को पूरा किया जा सकता है और शरीर को पुन. निरोगी भी बनाया जा सकता है। शरीर में तन्तुओं के बनने एवं उनके स्वभाविक कार्य क्षमता के लिए अकार्बनिक पदार्थो की आवश्यकता होती है और इसे हम शरीर विधान रसायन शास्त्र (Physiological) द्वारा जान सकते है।

बायोकैमिक सिद्धात के अनुसार जब तक सभी तन्तु लवण (Tissue Salts) शरीर में उपयुक्त परिणाम में रहते है तब तक शरीर स्वस्थ रहता है। इनके परिमाण में जरा भी गड़बड़ी होने पर शरीर रोग ग्रस्त हो जाता है। इस गड़बड़ी को तन्तु लवणों (Tissue Salts) को औषधी के रुप में देकर शरीर की चिकित्सा करना ही बायोकैमिक चिकित्सा है। डॉ. डब्ल्यु.एच. शुस्लर ने इस चिकित्सा प्रणाली का विधिवत अविष्कार किया और उन्होने 1873 में लिपसिक हौम्योपैथिक गजट में इस विषय पर एक लेख लिखा व धीरे-धीरे उनकी ये चिकित्सा प्रणाली समस्त संसार में फैल गयी जो आज के समय में बहुत प्रचलित है।

जर्मन बायोकेमिस्ट और भौतिक विज्ञानी डॉ. विल्हल्म हैनिरिक शुस्लर ने जैविक राख का विश्लेषण किया और ये बारह लवण (Salt) ही हमारे शरीर के हर हिस्से की वृद्धि एवं सुरक्षा के लिए अति आवश्यक है।

ये बारह अकार्बनिक लवण निम्न है एवं इनके विशेष लक्षण निम्न प्रकार के है।

1.केल्केरिया फलोर - सूजन एवं कडापन, त्वचा का फटना।

2.केल्केरिया फास - अण्डे की सफेदी के समान गाढे स्त्राव, ठण्ड से रोग बढ़े।

3.केल्केरिया सल्फ - स्त्राव गाढ़े पीले रंग के, रक्त मिश्रित जख्म जो आसानी से ना भरते हो।

4.फेरमफास - प्रदाह टपकन का सा दर्द, गर्मी श्लैस्मिका झिल्लियों की खुश्की, ठण्ड से रोग घटे।

5.काली म्युर - सूजन, जीभ पर राख के से रंग की मैली सफेद परत जीम है।, स्त्राव गाढ़ा, सफेद एवं लसदार।

6.काली फास - स्नायु दुर्बलता, दुर्गन्धित स्त्राव हो।

7.काली सल्फ - खुली ठण्डी हवा में आराम आए, स्त्राव हरे-पीले रंग के हो, गर्मी से रोग बढ़े।

8.मेग्नेशिया फास - अक्षेपजन्य रोग, गर्मी व गर्म सेंक से आराम आए।

9.नैट्रम म्युर - मन का दुखी रहना, अधिक मात्रा पानी से स्वच्छ स्त्राव आए, जीभ साफ।

10.नैट्रम फास - जीभ पर फटे दूध की सी पीले रंग की मैल की परत, स्त्राव चमकीला पीला रंग का, अम्लता व पेट में कीड़े (Worms)।

11.नैट्रम सल्फ - पित विकास, जीभ पर पितयुक्त पीली मैल, बरसात व नम स्थान पर रोग बढ़े।

12.साइलीशिया - दूर्गन्धीत स्त्राव व मवाद, ठण्ड सहन ना होना, अमावस्या और पूर्णिमा को रोग बढ़े। पैरो का पसीना दब जाने या टीके लगाने के बाद आए रोग।

ईन दवाईयों की शक्ति पोटन्सी 3x, 6x, 12x, 30x और 200x से सम्बोधित किया जाता है।

कम्पनी के इन्हीं महत्वपूर्ण योगदानों को निभाते हुए डॉ. डब्ल्यु शुस्लर का निर्धन 30 मार्च सन् 1898 में योरोप में हुआ था।

* बीएनपी में कार्यरम होने के साथ हौम्योपैथिक प्रेक्टिशनर भी हैं।

काव्य-मोती

श्रीमती अंजू मोटवानी
(द्वारा श्री आर.सी. मोटवानी, अपर महाप्रबंधक)

धागे आस के

कुछ आस्था के
कुछ अन्धविश्वास के
बूढ़े पेड़ की शाख पर
बंधे रंग. बिरंगे से
धागे है आस के
धागे बाँधे किसी ने
किसी का प्यार
पाने के लिए
और किसी ने व्यापार
अपना बढ़ाने के लिए
धागे कुछ सफलता
पाने के लिए और
कुछ जीवन अपनों का
बचाने के लिए
हर धागे से बंधी
कहीं न कहीं उम्मीदी की
कोई तो एक किरण
धागा बांध मन ही मन
खुश हो लेता हर कोई
एक संतुष्टि का भाव
चेहरे पर झलकता
आस पूरी होना न होना
तो बाद की बात है
अपने स्वार्थ से घिरा
हर कोई बांध कर धागा
बस अपनी राह चल देता
सूखा बेचारा वीरान पेड़
किसी सरमाये की तरह
सबकी मन्नतों का
बोझ सहता, कुछ न कहता
दिल उसका भी दुखता
फिर भी दुआएं लाखों
उनके सुखद जीवन
के लिए हरदम वो देता
सदियों से होते आये
इस खेल तमाशे को
चुपचाप देखता
और इच्छाएँ सबकी
पूरी होने तक
उनके लौटने के
इंतजार में थका हारा
बस राह निहारता
धागे खुलने के इंतजार में।

ओस की बूँद

पत्ते की नोंक पे
झिलमिलाती एक बूँद
मोती सी चमकती
जैसे हो सर्द रात की
कोई कहानी कहती
अस्तित्व खतरे में
कुछ ही पलों की मेहमान
यह गई कि वो गई
सूर्य को डरी और सहमी
निगाहों से निहारती
क्योंकि जानती है कि
रश्मियाँ आते ही
उसको समेट लेंगी
बस था रातभर का ही
डेरा यहाँ उसका
मिलन उस पत्ते से
बस इतना ही
फासला बस उतना ही
जितना जिंदगी और
मौत के बीच
एक पल का भी
भरोसा नहीं
किस पल फिसल जाए
कोई नहीं जानता

दोहे

माँ के आँचल में सदा, मिलता चैन अपार ।
माँ के बिन सूना लागे, घर आँगन हर द्वार ॥
माँ की जब लोरी सुनी, मधु सी घुली मिठास ।
डूबा रहता प्यार में, माँ का हर अहसास ॥
माँ से ही है मायका, माँ से प्यार दुलार ।
सावन सा हर माह है, हर दिन है त्यौहार ॥
माँ के हाथों का वही, मनभावन सा स्वाद ।
माँ जाने के बाद भी, हर पल आता याद ॥
चुका सका न उम्र भर, कोई माँ का कर्ज ।
बुद्धि मिले ऐसी हमें, निभा सकें हम फर्ज ॥

भारतीय संविधान के रोचक तथ्य

(26 जनवरी गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में)

अखिलेश गुप्ता
उप प्रबंधक (तकनीकी नियंत्रण)

• साधारण शब्दों में कहा जाए तो भारतीय संविधान किताब भारत की सर्वोच्च शासक है। भारतीय संविधान के निर्देश ही भारत के शासक के पीछे से शासन कर रहे है। भारत के स्वतंत्र होने से पहले भारत पर अंग्रेजों के नियम और कानून लागू थे।

• पिछले एक इंडिया एक्ट साल 1935 के अनुसार सरकार भारतीय नागरिकों से पक्षपात कर उनको कई बुनियादी अधिकारों से वंचित कर दिया था लेकिन साल 1946 में गठन भारतीय संविधान सभा बहस और विचार विमर्श कर संविधान का जो अंतिम मसौदा तैयार किया जिसमें सभी भारतीयों को बराबरी और न्याय का अधिकार दिया है।

• हमारा संविधान कानूनी तौर पर 1950 के जनवरी महीने में लागू हुआ था जिसे आज हम 26 जनवरी के दिन गणतंत्र दिवस के रूप में मनातें है।

• भारत के मूल संविधान को हरी नारायण रायजादा द्वारा सुंदर सुलेख इटैलिक शैली में हस्तलिखित किया गया था और इसके प्रत्येक पन्ने पर आर्टिस्ट शांति निकेतन द्वारा सजाया गया था।

• भारतीय संविधान की असली कापी हिंदी और अंग्रेजी में लिखी गयी है और उनकी मूल प्रतियों को संसद के पुस्तकालय में विशेष हीलियम केस में रखा जाता है।

• भारतीय संविधान दुनिया में किसी भी अन्य देश से सबसे बड़ा लिखित संविधान है। हमारे संविधान के कुल 25 पार्ट है जिसमें 395 आर्टिकल 8 अनुसूचियां शामिल है।

• 9 दिसंबर, 1946 संविधान सभा भारत के सामने आई थी और ठीक 2 साल, 11 महीने और 18 दिन बाद अंतिम ड्राफ्ट भी तैयार हो गया था।

• संविधान का फाइनल ड्राफ्ट जब तैयार हुआ उसके बाद बहस और चर्चा करके इसमें 2000 से अधिक संशोधन करके इसे अंतिम रूप दिया गया था।

• संविधान का अंतिम मसौदा 26 नवम्बर, 1949 को पूरा हो गया था लेकिन कानूनी तौर पर इसे मान्यता 2 महीने बाद 26 जनवरी 1950 को मिली थी। आज इस दिन को गणतंत्र दिवस के रूप में देशभर में मनाया जाता है।

• हस्तलिखित संविधान पर 24 जनवरी, 1950 को हस्ताक्षर किए गए थे, संविधान सभा के 284 सदस्यों ने इस पर हस्ताक्षर किए गए थे जिसमें 15 महिलाएं भी शामिल थी. यह दो दिन बाद 26 जनवरी को अस्तित्व में आया।

• हमारें संविधान निर्माताओं ने अपने देश के लिए फाइनल ड्राफ्ट तैयार करने के लिए विभिन्न देशों के अन्य संविधानों से प्रेरणा ली है। यही वजह है की भारतीय संविधान अक्सर उधारी का एक बैग कहा जाता है।

• पंचवर्षीय योजनाओं का विचार सोवियत संघ से और सामाजिक–आर्थिक अधिकार आयरलैंड से लिया गया है।

• स्वतंत्रता, समानता और हमारे प्रस्तावना में भाईचारे के आदर्शों फ्रांसीसी क्रांति से लिया गया है और यह सभी फ्रेंच आदर्श वाक्य है।

• हमारे संविधान की प्रस्तावना संयुक्त राज्य अमेरिका के संविधान की प्रस्तावना से प्रेरित था जो 'हम लोग' टैगलाइन के साथ शुरू होता है।

• हमारे संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त मौलिक अधिकारों को अमेरिकी संविधान से लिया गया है. हमारा भारतीय संविधान सभी नागरिकों के बुनियादी मानव अधिकार के रूप में 6 मौलिक अधिकारों को मान्यता देता हैं।

• संविधान की दिलचस्प बात यह थी की शुरुआत में, संपत्ति का अधिकार मौलिक अधिकारों में से एक था जिसे 1978 में 44वें संशोधन करके इसे नष्ट कर दिया गया था।

बैनोप्रिन

2019

January

S	M	T	W	T	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

February

S	M	T	W	T	F	S
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28		

March

S	M	T	W	T	F	S
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
31						

April

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

May

S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

June

S	M	T	W	T	F	S
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30						

July

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

August

S	M	T	W	T	F	S
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

September

S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

October

S	M	T	W	T	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

November

S	M	T	W	T	F	S
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

December

S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

भारत सरकार की राजभाष नीति के अंतर्गत-

1. क एवं ख क्षेत्रों के साथ 100 प्रतिशत मूल पत्राचार हिन्दी में ही करें।
2. धारा 3 (3) के अंतर्गत ज्ञापन, परिपत्र, विज्ञापन आदि द्विभाषी ही जारी करें ।
3. हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिन्दी में ही दें।
4. समस्त रबर मोहरें, लेटर हेड, रजिस्टर आदि द्विभाषी ही बनें हों।

राजपत्रित अवकाश ऐच्छिक अवकाश